सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2014 वर्ष 13 अंक 09

ख़ल्क़ की ख़िदमत से भी मिलता है मोमिन को सुकूं

रब को जो माबूद माने और मुहम्मद को नबी
वह पढ़े क़ुर्आन दिल से और अक़वाले नबी
दिल में उसके हुब्बे रब हो और हो हुब्बे नबी
पाने को रब की रिज़ा अपनाए वह राहे नबी
इस तरह के सारे इन्सां रिश्ते में वह भाई हैं
हैं वह सब मोमिन व मुस्लिम और भाई भाई हैं
ज़िक्र से अल्लाह के मोमिन को मिलता है सुकूं
ख़ल्क़ की ख़िदमत से भी मोमिन को मिलता है सुकूं
या ख़ुदा प्यारे नबी पर तेरे हों लाखों सलाम
और सब असहाब पर भी रहमतें उतरें मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
अगला जीवन	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	9
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	14
तालीम व तरबीयत मुफ़ीद व	मौलाना तक़ी उस्मानी	18
यह कैसी आज़ादी है?	हाशमा अन्सारी	19
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	22
अरंड ख़रबूज़ा	फ़ौजिया सिद्दीक़ा	23
बख़्शिश की दुआ	इदारा	25
मानवता का स्तर	मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	26
पत्तियों में छिपा डायबिटीज	इदारा	27
तबलीगे नबवी सल्ल0 उसके	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	29
मुस्लिम बच्चों के लिए	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	32
परदा	शमीम इक़बाल खाँ	33
अरे मेरी बेटी	इदारा	37
मेकसीको में इस्लाम	जावेद अख़्तर नदवी	38
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद- यह सब रसूल हैं हमने इनको एक दूसरे पर फज़ीलत अता की, कोई तो वह हैं कि बात की उससे अल्लाह ने ख़ुद, और बुलन्द किये बाजों के दर्जे, और दिये हमने मरयम के बेटे ईसा अलै0 को खुले मोजिज़े और ताक़त दी उसको रुहुल कुदुस यानी जिब्रील से(1) और अगर अल्लाह चाहता तो न लड़ते वह लोग जो हुए इन पैग़म्बरों के बाद, इसके बाद कि पहुँच चुके इनके पास साफ हुक्म, लेकिन उनमें इख़्तिलाफ पड़ गया फिर कोई तो उनमें ईमान लाया और कोई काफिर हुवा, और अगर चाहता अल्लाह तो वह आपस में न लड़ते, लेकिन अल्लाह करता है जो चाहे(2)(253) ऐ ईमान वालो खर्च करो उस में से जो हमने तुम को रोज़ी दी उस दिन के आने से पहले कि जिसमें न खरीदो फ़रोख़्त है और न दोस्ती, और न सिफारिश(3) और जो काफिर हैं वही हैं ज़ालिम(4)(254)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. पैग़म्बर जिनका ज़िक्र हुआ उनमें फ़ज़ीलत दी हमने बाज को बाज पर, उनमें कुछ ऐसे हैं कि उनसे बात की खुदा तआला ने जैसे आदम और मूसा अलै0 और बुलन्द किया बाजों का दर्जा जैसे कोई कौम का नबी, कोई एक गांव का, कोई एक शहर का, कोई तमाम दुन्या का जैसे मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इनायत हुए हज़रत ईसा अलै0 को खुले मोजिज़े जैसे मुर्दों को ज़िन्दा करना, और पैदाइशी अंधों और सफेद दाग वाले मरीज़ों को ठीक करना, वगैरह, और ताकत दी उनको रूहे पाक यानी हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से उनकी मदद को भेज कर।

2. जो लोग उन नबियों पर ईमान लेआये और साफ हुक्म और रौशन निशानियाँ हमारे पैग़म्बर सल्ल0 के नबी होने की देख सुन चुके अगर खुदा चाहता तो यह आपस में न लड़ते और मुखालफत न करते और कोई उनमें मोमिन और कोई काफिर न होता, लेकिन अल्लाह तआला क़ादिर है जो चाहता है करता है कोई काम उसका हिकमत से खाली नहीं।

3. इस सूरत में इबादत व मुआमलात के मुतअ़ल्लिक जियादा तर अह्काम बयान फरमाये जिनमें सब की तामील नफ़्स को ना गवार और भारी है और तमाम आमाल में जियादा दुशवार इन्सान को जान और माल का खर्च करना होता है और अह्कामें इलाही अक़्सर जो देखे जाते हैं या जान के मुतअल्लिक हैं या माल के, और गुनाह में बन्दे को जान या माल की महब्बत और रिआयत ही अक्सर मुब्तला करती है गोया उन दोनों की महब्बत गुनाहों की जड़, और उससे नजात तमाम फरमां बरदारियों की सुहूलत का मन्शा है इसलिए इन अहकामात

शेष पृष्ठ ....13.. पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मुजाहिद की फजीलत और आप सल्ल० की तमन्ना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला उस शख़्स का जिम्मेदार है जो उसके रास्ते में निकले और फरमाता है कि उसको मेरी राह में जिहाद करने, मुझ पर ईमान लाने और रसूलों की तस्दीक के अलावा किसी चीज़ ने न निकाला हो तो मुझ पर उसकी जमानत है कि उसको जन्नत में दाखिल करूं (यानी अगर वह शहीद हो) या उसको सवाब और माले गनीमत के साथ घर पहुंचा दूं, और क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्जे में मेरी जान है जो जख्म अल्लाह के रास्ते में लगेगा तो क़ियामत के दिन उसी सूरत में आयेगा, गोया आज लगा है (यानी खून टपकता हुआ) और रंग उसका खून का होगा और खुशबू मुश्क़ की होगी, और मुझे उस ज़ाते अकदस की क़सम जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, अगर मुझे मुसलमनों की तकलीफ का ख़्याल न होता तो मैं किसी फौजी दस्ते को भेज कर न बैठ जाता लेकिन मैं उनमें इतनी गुंजाइश नहीं पाता कि उन सब की सवारी का इंतिज़ाम करूं, और न उनमें इतनी गुंजाइश है कि वह खुद ही इंतिजाम कर लें और मैं चला जाऊँ और वह रह जायें, यह भी उनके लिए मुश्किल है। क़सम है उस की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि मेरी तो यही ख़्वाहिश है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद करूं और क़त्ल किया जाऊं, फिर जंग करूं और क़त्ल किया जाऊं, फिर जगं करूं फिर क़त्ल किया जाऊं। (मुस्लिम)

खुदा के रास्ते का ज़ख़्म—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह के रास्ते में जिसको ज़ख़्म लगेगा वह क़ियामत में इस तरह आयेगा कि उसके ज़ख़्मों से खून बह रहा होगा, और रंग तो खून का होगा और खुखबू मुश्क की होगी। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत मुआज़ रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो मुसलमान अल्लाह के रास्ते में इतने देर तक जंग करे कि एक बार ऊँटनी का दूध दुह कर दूसरी बार दुहा जाये तो उस पर जन्नत वाजिब हुई और जिसको अल्लाह के रास्ते में कोई ज़ख़्म लगा या कोई तकलीफ पहुँची तो वह कियामत के दिन इस सूरत से आयेगा गोया आज ज़ख़्म लगा है और रंग जाफरान का होगा और बू मुश्क की होगी। (अबू दाऊद—तिर्मिज़ी)

अल्लाह के रास्ते में जिहाद सत्तर साल की इबादत से अफ़ज़ल है—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0

शेष पृष्ठ ....08.. पर

अगला जीवन

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सातवीं सदी के आख़िर में इस्लाम भारत में व्यापारियों तक सूफ़ियों द्वारा दाख़िल हो चुका था, भली आत्माओं तक जब इस्लाम पहुंचा तो उन्होंने इसका स्वागत किया, किसी ने उसे स्वीकार किया तो किसी ने उस का आदर किया, इस्लाम पहुँचाने वालों का आदर सम्मान किया। फिर यह सिलसिला चल पड़ा और आठवीं सदी के आरम्भ में मुस्लिम शासकों ने भी इस ओर रुख़ किया, शासकों, सूफ़ियों, व्यापारियों के साथ बहुत से मुसलमान यहाँ आये और फिर यहीं के हो रहे, उनका इस्लामी स्वभाव भारत वासियों को प्रभावित करता रहा और इस्लाम फैलता रहा, फिर अल्लाह की तौफ़ीक़ से पूरे भारत में इस्लाम फैल गया, और भारत में मुसलमान शासन करने लगे, 1290 ई0 में कुत्बुद्दीन ऐबक पहला मुस्लिम शासक हुआ लगभग 336 वर्षों तक अफ़ग़ान काल रहा फिर 1526 ई0 में बाबर आया 200 वर्षों से अधिक मुग़लों का शासन रहा, अब पूरे देश में इस्लाम का परिचय हो चुका था। इस्लाम आने से पहले भारत में तीन धर्म प्रचलित थे, सनातन धर्म (जो हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है) बौध धर्म और जैन धर्म, इनमें सबसे पुराना धर्म सनातन धर्म है, इन तीनों धर्मों में आवागमन की मान्यता है, अर्थात एक आत्मा जब एक शरीर त्यागती है (अर्थात उसकी मौत आती है) तो वह आत्मा कोई दूसरा शरीर पाती है, उसका अगला शरीर मानव का भी हो सकता है और पशु पक्षी का भी हो सकता है, यहाँ तक की कीड़े मकोड़े का भी हो सकता है। मरने वाले को अगला शरीर उसके कर्मों के अनुसार मिलता है। इस विश्वास पर हम यहां कोई विवाद छेड़ना नहीं चाहते लेकिन कहना चाहते हैं कि इस्लाम जो एक सुरक्षित सत्य धर्म है वह इस आवा गमन के विश्वास को नकारता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा (रसूल) हैं, उनका लाया हुआ, क़ुर्आन अक्षर अक्षर सुरक्षित है, उनकी सारी शिक्षाएं हदीस की किताबों में सुरक्षित हैं उनकी शिक्षाओं के अनुसार अगला जीवन इस प्रकार है—

अगले जीवन के दो भाग हैं, पहला मौत के पश्चात आरम्भ हो कर कियामत के दिन तक रहेगा, और दूसरा कियामत से आरम्भ होगा जिसका अन्त नहीं मिलता। दादा आदम के ज़माने से अब तक कितना समय बीता? बताना कठिन है, इसी प्रकार क़ियामत कब आयेगी यह बताना असम्भव है। इसीलिए मैं कहता हूं दोनों कालों का ओर छोर नहीं मिलता, परन्तु पहले भाग, मौत से क़ियामत तक को क़ुर्आन शरीफ़ में बहुत थोड़ा समय समझने का संकेत मिलता है। कियामत के दिन लोगों से पूछा जाएगा कि तुम दुन्या में कितने समय तक रहे तो वह उत्तर देंगे एक दिन या उससे कम

(अलमोमिनून 113) एक जगह और है जब लोग कियामत को देखेंगे तो उनको लगेगा कि इस जगत में यह प्रातः के या सायंकाल के थोड़े समय के बराबर रहे होंगे (अन्नाज़िआत 46)। जो भी हो इस्लामिक शिक्षानुसार हर मनुष्य का अगला जीवन उसके देहान्त के समय आरम्भ होता है जिसका पहला भाग कियामत आने तक है और दूसरा कियामत से आरम्भ होगा।

इस्लामिक शिक्षानुसार जब मनुष्य का देहान्त होता है चाहे यह देहान्त अपनी शय्या (बिस्तर) पर हो चाहे किसी दुर्घटना में जैसे बाघ खा ले, हाथी कुचल दे, बन्दूक की गोली लगे, बम फटे, आग में जल जाए पानी में डूब जाए आदि हर हाल में देहान्त के समय मौत का फिरिश्ता (दूत) पहुंच कर आत्मा (रूह) को शरीर से निकालता है, आत्माएं दो प्रकार की होती हैं एक वह जिन्होंने अपने समय के सन्देष्टा का अनुकरण किया अल्लाह पर ईमान लाई (ईश्वर को माना) और ईश्वरीय शिक्षानुसार जीवन व्यतीत किया यहां अस्पष्ट रहे कि अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के बाद उन का अनुकरण किया, ऐसी आत्माओं के साथ बहुत अच्छा व्योहार होता है, दूसरी वह आत्माएं जो न ईश्वर में विश्वास रखती है, न ईश्वरी दूतों की बात स्वीकार करती हैं ऐसी आत्माओं के साथ देहान्त के पश्चात बहुत बुरा व्योहार होता है इस्लामिक शिक्षानुसार मरने के पश्चात मरने वाले की आत्माएं जहाँ रखी जाती हैं उसको आलमे बरज़ख़ (बरजख़ लोक) कहते हैं, बरज़ख़ का अर्थ है आड़, चूंकि वह आलम हमारी आंखों के आड़ में है, हम उसे देख नहीं पाते इसलिए उसे बरज़ख़ कहा गया है।

आलमे बरज़ख़ के भी दो भाग हैं, एक को इल्लीयीन कहते हैं इसमें ईश्वर (अल्लाह) पर विश्वास रखने वाली भली आत्माएं रहती हैं, वहां उसको बहुत आराम रहता है, कोई तो आनन्द से सोती हैं, कोई इधर उधर अच्छी जगहों पर आती जाती भी हैं, इल्लीयीन उस रजिस्टर को भी कहा गया है जिसमें मरने वाली अच्छी आत्माओं का नाम लिखा जाता है।

दूसरा भाग सिज्जीन कहलाता है, इसमें ईश्वर पर विश्वास न रखने वाली उद्दण्ड आत्माएं रखी जाती हैं वहां उन को भाँति भाँति के कष्टों का सामना करना पड़ता है और कियामत तक वह कष्ट झेलती रहेंगी। सिज्जीन उस रजिस्टर को भी कहते हैं जिसमें मरने वाली बुरी आत्माओं के नाम लिखे जाते हैं।

आलमे बरज़ख़ में हर आत्मा को रहने के लिए जो जगह मिलती है हम उसको उसकी क़ब्र भी कहते हैं, एक अस्थाई क़ब्र (समाधि) वह है जिसमें मुरदा दफ्न किया जाता है यह आमतौर से कुछ समय पश्चात समाप्त हो जाती हैं पता भी नहीं रहता कि कौन कहां गाड़ा गया था, परन्तु बरज़ख़ वाली क़ब्र क़ियामत आने तक सुख या दुख के साथ बाकी रहेगी, अलबत्ता यहाँ की क़ब्र जब तक रहती है इसका सम्बन्ध

बरज़ख़ वाली क़ब्र से रहता है, भले मनुष्य की यहां की क़ब्र पर जब कोई भला आदमी सलाम करता है तो उसकी आत्मा को बरज़ख़ की क़ब्र में तुरन्त खबर हो जाती है।

इस्लामिक शिक्षानुसार जब मरने वाले को क़ब्र में लिटा कर उसे बन्द कर देते हैं, तो वहीं पर अल्लाह के दो फ़िरिश्ते आते हैं, जो व्यक्ति किसी दुर्घटना में मरा है उसकी क़ब्र नहीं बनी है उसके पास बरज़ख़ वाली क़ब्र पर फ़िरिश्ते आते हैं और हर मरने वाले से तीन प्रश्न करते हैं।

पहला प्रश्न होता है "तेरा रब (पालनहार) कौन है? अब अगर आत्मा इस जगत में ईश्वर पर विश्वास रखती थी अर्थात अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान रखती थी, वह उत्तर देगी, मेरा रब अल्लाह है, मेरा पालनहार अल्लाह है (जिसने समस्त संसार को रचा उस को हम अल्लाह कहते हैं) । दूसरा प्रश्न होगा, तेरा दीन (धर्म) क्या है? अब अगर वह आत्मा ईमान वाली है तो उत्तर देगी मेरा दीन इस्लाम है। मेरा धर्म अपने रचयता के समक्ष अपने को समर्पित कर देना है, तीसरा प्रश्न अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में होगा कि इनके विषय में क्या कहते हो? ईमान वाली आत्मा कहेगी, हम इन पर ईमान लाए हैं हम इनकी उम्मत में हैं। (स्पष्ट रहे कि क़ब्र के यह तीनों प्रश्न, अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आ जाने के बाद आरम्भ हुए अन्तिम सन्देष्टा के आने के पहले क्या क्या सुवाल होते रहे उसका ज्ञान हमको नहीं है)। अब एक भली आत्मा जब तीनों प्रश्नों के उत्तर दे चुकेगी तो फ़िरिश्ते उसको शुभ सूचना दे कर और यह कह कर चले जाएंगे कि सो जा ऐसी आनन्द की नींद जैसी आनन्द की नींद एक दुल्हन की होती है। परन्तु बुरी आत्माएं तीनों प्रश्नों के उत्तर में यही कहेंगी कि हाय मुझे कुछ नहीं मालूम है, फ़िरिश्ते उसको बुरी सूचना सुना कर भांति भांति की यातनाओं में ग्रस्त छोड़ कर चले जाएंगे और कियामत तक उन यातनाओं को भुगतते रहेंगे। (इन फ़िरिश्तों में एक का नाम मुनकर और दूसरे का नकीर है दोनों को मिला कर नकीरैन कहते हैं)।

निःसंदेह मरने के पश्चात यह देह कभी तुरन्त और कभी कुछ समय बाद गल कर मिट्टी हो जाएगा परन्तु रूह को बरज़ख़ में एक देह (जिस्म) मिलेगा क़ब्र का दुख या सुख वह जिस्म महसूस करेगा। आपने बहुत बार अच्छे और बुरे डरावने स्वप्न देखे होंगे, आपका शरीर अपनी शय्या पर है परन्तु आप स्वप्न में एक शरीर के साथ अच्छा या बुरा स्वप्न देख रहे हैं, इसी पर आप बरज़ख़ के जिस्म (शरीर) को समझ सकते हैं। इस्लामिक शिक्षानुसार कियामत आएगी उसके भी दो भाग हैं– पहला भाग यह है कि अल्लाह के हुक्म से इस्राफ़ील अलै० (फ़िरिश्ता) सूर फूँकेंगें, उसकी आवाज़ इतनी अधिक होगी कि सब जीव जन्तु घबरा कर बाहर निकल पड़ेंगे, फिर सब मर

जाएंगे ऐसी आवाज़ होगी कि सारे समुद्र उबल कर एक दूसरे से मिल जाएंगे, सूरज प्रकाश हीन होजाएगा, नक्षत्र गिर पड़ेंगे, आस्मान फट जाएगा, पहाड़ धुन्की ऊन के समान उड़ते फ़िरेंगे फिर सब मिट जाएगा, सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात बाक़ी रहेगी फिर जब चाहेंगे अल्लाह तआला इस्राफील अलै0 को दोबारा सूर फूंकने का आदेश देंगे, उसकी आवाज़ से फिर सब कुछ अस्तित्व में आजाएगा और तमाम जीव जन्तु जीवित हो जाएंगे सारे मनुष्य जीवित हो कर एक मैदान में एकत्र होंगे, यहां से अगले जीवन का दूसरा भाग शुरुअ़ होगा, यह हश्र का मैदान होगा यह बड़ा सख़्त दिन होगा, फिर अल्लाह के हुक्म से सारे मनुष्यों के कर्मों का लेखा जोखा होगा, पहले तमाम पशुओं, पक्षियों का लेखा जोखा होगा, फिर उनको अल्लाह के हुक्म से मिटा दिया जाएगा, उस दृष्टि को देख कर कुछ बुरे लोग कहेंगे क्या अच्छा होता हम भी इनके समान मिटा कर मिट्टी कर दिये जाते (अन नबा आख़िर)। अब जिन्नों और इन्सानों का लेखा जोखा होगा, लेखा जोखा के पश्चात अच्छे लोगों को जन्नत का प्रवेश मिलेगा जहाँ सुख ही सुख आराम ही आराम है, वह उसमें सदैव रहेंगे। बुरे लोगों के लिए जहन्नम का फ़ैसला होगा जहाँ आग है वहां दुख ही दुख है, कुछ ईमान वालों को अपने कुकर्मों की सज़ा भुगतने के लिए कुछ समय तक जहन्नम में रहना पड़ेगा फिर वह जन्नत में आजाएंगे परन्तु नास्तिक अल्लाह को न मानने वाले, अल्लाह के साथ साझी ठहराने वाले सदैव जहन्नम की सज़ा भोगेंगे।

यह है इस्लामिक शिक्षानुसार अगले जीवन का संक्षिप्त वर्णन अब जिसका जी चाहे इस पर विश्वास करके अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ला कर अपना अगला जीवन सुख मय बनाए, जिसके न समझ में आये वह जाने जो सत्य था बयान कर दिया गया।

❖❖❖

प्यारे नबी की...............

से रिवायत है कि एक सहाबी रज़ि0 किसी घाटी से गुज़रे जिसमें मीठे पानी का एक छोटा सा चश्मा था, उनको चश्मा बहुत खुशगवार लगा, कहने लगे अगर मैं लोगों से अलाहेदगी इख़्तियार करता तो इसी घाटी में कियाम करता, मगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिना इजाज़त ऐसा हरगिज न करूंगा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका ज़िक्र किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐसा न करना, तुम्हारा अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना अपने घर में सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से अफज़ल है, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बखशे और जन्नत में दाखिल करे, अल्लाह की राह में अल्लाह के दुशमनों से लड़ो, जो अल्लाह की राह में इतनी देर तक जंग करे कि एक बार ऊँटनी दुह कर दोबारा दुही जाये तो उसके लिए जन्नत वाजिब होगयी। (तिर्मिज़ी)

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

हज्जतुल विदाअ—

अरबों के केन्द्रीय शहर मक्का, मुसलमानों के इन्तिज़ाम में आ जाने और पड़ोस के कबाएल हवाज़िन और सकीफ़ की कोशिश के भी नाकाम हो जाने और सारे अरब का इस्लाम को गालिब (प्रभुत्वशाली) मान लेने के बाद मुसलमानों को किसी तरह का खतरा बाकी न रहा और रूकावटें ख़त्म हो जाने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों की बड़ी तादाद को मक्का में जो सारे अरब का दीनी केन्द्र की हैसियत से माना जाता था, हज के मौक़े पर इकट्ठा करना मुनासिब समझा कि फरीज़—ए—हज भी अदा करें और एक जगह जमा होने पर खिताब—ए— आम (सामान्य सम्बोधन) भी हो जाए।

चुंनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस हज के मौक़े पर एक लाख 14 हज़ार की तादाद में आपके मानने वाले जमा हुए और हज किया। आपका यह हज दावते इस्लामी की तकमील (पूर्ति) और निज़ामे इस्लामी के बाकाएदा क़याम (स्थापना) का ऐलाने आम था और यह आपकी मदनी ज़िन्दगी का पहला और आखिरी हज था, इसी में उम्मते मुस्लिमा के अमल के लिए उमूमी हिदायत (आदेश) दी गयी, और दीन की तकमील (पूर्ति) जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले नहीं हुई थी अब उनका भी ऐलान कर दिया गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज का जो खुतबा दिया उसमें आईन्दा के लिए हिदायत और ज़ाबतये अख़्लाक (आचार संहिता) का खुला ऐलान और इंसानी खूबियों से भरपूर ज़िन्दगी का जामे और मुफस्सल तसव्वुर के उसूल (सिद्धान्त) जाहिर फरमा दिये। इसी मौक़े पर कुरआन मजीद की वह आयत जिसमें दीन के मुकम्मल होने की इत्तिला दी गयी, नाज़िल हुई।

"आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (जिसको पिछले नबियों के ज़रिये इंसानों तक पहुंचाने का सिलसिला चला आ रहा था) मुकम्मल कर दिया और अपनी यह नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को ही बहैसियत दीन के पसन्द किया।"

(सूरः माएदा—3)

इस कुर्आनी एलान में तीन बुनियादी बातें बतायी गयीं एक तो यह कि इंसानी ज़िन्दगी का इस ज़मीन पर आग़ाज़ (प्रारम्भ) होने के वक्त से इन्सानों के सुधार और चरित्र निर्माण के जो आदेश नबियों द्वारा बराबर आते रहे अब वह मुकम्मल (पूर्ण) हो गये और दीन के अहकाम इस सतह तक पहुंचा दिये गये जिसमें किसी बदलाव और कमी व बेशी व इज़ाफ़ा वग़ैरह की ज़रूरत पेश न आयेगी, इसके लिए यह बात फरमायी कि "मैंने दीन तुम्हारा मुकम्मल कर दिया" दीन की वह ख़ूबियाँ जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी और मुनासिब और जितनी होना चाहिए वह पूरी कर दी गई, दूसरी बात यह फरमायी कि

मैंने दीन व अखलाक़ की अपनी नेअ़मत तुम सब पर पूरी कर दी अर्थात इन्सानियत और फर्द इन्सानी के सलाह व फलाह का जो दर्ज–ए–कमाल व नमूना–ए–आला है वह तुम्हारे लिए मुहय्या कर दिया गया और तुम को इस मुक़ाम–ए–बुलन्द तक पहुंचा दिया गया फिर उसी से तअल्लुक रखने वाली बात के तौर पर यह वाज़ेह कर दिया गया कि मक़ामे बुलन्द के लिए जिस तरीक़–ए–कार व सिफ़ाते हसना की ज़रूरत है वह तरीक़–ए–कार व सिफाते हसना दीन इस्लाम की सूरत में अता की गई हैं और अल्लाह रब्बुल आलमीन की रज़ामन्दी का इन्हिसार अब इसी पर है, अल्लाह तआला इसी के मुताबिक़ इन्सानी अमल को मन्जूर करेगा, जिसको फरमाया गया कि दीने इस्लाम ही मेरे लिए पसन्दीदा और क़ाबिले कुबूल है, इस तरीके से आप सल्ल0 की रिसालत को और दीन के पैग़ाम को इस ज़मीन पर इन्सानी आबादी के क़ायम रहने तक के लिए तै कर दिया गया, और हुज़ूर सल्ल0 ने इस मौक़े से इन्सान के आला इन्सानी अक़दार और अदल व मुसावत और इन्सानी जान की सलामती और इन्साफ की अहम ज़रूरी हिदायात इनायत फरमायीं और हाज़िरीन को मुखातब करते हुए फ़रमाया कि जो यहां मौजूद हैं वह उनको याद रहे, दिल व दिमाग़ में महफ़ूज़ कर लें और जो मौजूद नहीं हैं, मौजूद लोग उन्हें यह हिदायात पहुंचाएं, क्योंकि बाज़ औक़ात बराहे रास्त सुनने वाले से ज़्यादा बिलवास्ता सुनने वाला बात को ज़्यादा अहमीयत के साथ एख़्तियार करता है।

आप का आख़िरी हज और हज की फर्ज़ियत–

हिजरत के बाद हुज़ूर सल्ल0 ने सिर्फ यही एक हज किया और यही आपका पहला और आखिरी हज यानी अपनी रिसालत के काम की तकमील पर उम्मत से आपकी रुख़्सती की मुलाकात थी। इससे पहले हज की फर्ज़ियत भी नहीं हुई थी यह फर्ज़ियत आपकी वफ़ात से एक साल पहले सन् 9 या 10 हिजरी में हुई। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायत और दीनी इरशादात के लिहाज़ से बहुत अहमीयत रखता है। इस्लाम को ग़ालिब करने की कोशिशों की कामयाबी और इस्लामी पैग़ाम की तकमील के ऐलान और उम्मते इस्लामिया के कयामत तक हिदायत देने का यह बेहतरीन मौक़ा था, जिसमें मुसलमानों का बहुत बड़ा इजतिमा था चुनांचे जब यह मौक़ा आया जो अल्लाह तआला के आख़िरी रसूल और उम्मते इस्लामिया के अबदी (अनन्त) रहबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी का आख़िरी साल था, इसमें आपने अपने मानने वालों के क़यामत तक अमल करने की खुली ताकीद की और इसी के साथ तबलीग़े हक़ की ज़िम्मेदारी भी सुपुर्द की। आपके इस हज में इबादते हज के लिए सही नमूना भी दिखाया गया है। अल्लामा इब्ने क़य्यिम की किताब "जादुल मआद" से इस हज की तफ़सील का इक़तिबास (उद्धरण) निम्नलिखित है–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज का इरादा

फ़रमाया और लोगों को मालूम हुआ तो लोगों ने तैयारियाँ शुरु कर दीं ताकि आपके साथ की इज़्ज़त हासिल करें। मदीने के क़रीबी इलाके के लोगों को जब यह ख़बर पहुंची तो वह भी गिरोह दर गिरोह इसी मकसद से आना शुरु हो गए, रास्ते में भी लोगों की जमाअतें जो हद्दे शुमार के बाहर थीं शरीके क़ाफ़िला होती गयीं, आगे पीछे दाएं बाएं हद्दे नज़र तक ख़िलकत नज़र आ रही थी''।

मदीने से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 24 ज़ीकाअदा को ज़ोहर की चार रकअत नमाज़ पढ़ कर रवाना हुए, रवानगी से पहले एक खुतबा दिया जिसमें एहराम और उसके वाजिबात व सुन्नत की तालीम दी, फिर अन्दर तशरीफ ले गए, तेल लगाया, कंघी की, लुंगी बांधी, चादर ओढ़ी और मक़ाम जुल हुलैफा (जो उस रुख से हज में जाने वालों के लिए एहराम बांधने की जगह है) पहुंच कर असर की दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर रात भर यहीं क़याम फरमाया। यहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूरी पाँच नमाज़ें पढ़ीं। अस्र, मग़रिब, इशा और फिर दूसरे दिन फज्र और जुहर तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात हमराह और सफर की साथी थीं। एक एक करके आप सबके यहां तशरीफ ले गए, जब ऐहराम बांधने का इरादा किया तो दूसरा गुस्ल किया। हज़रत आयशा रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बदन मुबारक पर और सर मुबारक पर खुशबू लगाई फिर आपने चादर और लुंगी से ऐहराम बांधा। फिर जुहर की दो रकअत पढ़ने के बाद मुसल्ले पर बैठे ही हज व उमरे के लिए बुलन्द आवाज़ से तकबीर कही।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वक्त हज्जे क़िरान का ऐहराम बांधा था (हज तीन किस्म का होता है, एक तो सिर्फ हज की नीयत की जाए वह हज्जे इफराद कहलाता है, दूसरी क़िस्म उमरा और हज दोनों करने की नीयत की जाए और पहले उमरा करके फारिग़ हो जाया जाए और फिर 8 ज़िलहिज्जा को हज का ऐहराम बांधकर हज किया जाए, यह हज तमत्तुअ़ कहलाता है, फिर तीसरी किस्म दोनों उमरा और हज को एक ही ऐहराम से बिला अलाहिदा किए हुए किया जाए, यह क़िरान है'')।

फिर आपने इन अल्फाज़ से तलबिया कहा: (तलबिया कहने से हज या उमरा जो हो उसका अमल शुरु हो जाता है और ऐहराम बांधे रहने तक होता है)।

ऐ अल्लाह! हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हूँ, हर तरह की तारीफ और नेअमतें तेरे ही लिऐ हैं, हुकूमत भी तेरी ही है तेरा कोई साझी नहीं।

यह तलबिया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुलन्द आवाज़ से कहा यहां तक कि तमाम सहाबा ने उसे सुन लिया। आपने फरमाने बारी तआला के मुताबिक उन्हें यह हुक्म दिया कि वह भी बुलन्द आवाज़ से तलबिया कहें।

फिर आप लब्बैक का तराना पढ़ते हुए आगे बढ़े और सहाबा कराम भी थोड़ी कमी व ज़्यादती के साथ दोहराते रहे लेकिन आपने किसी पर नकीर न फरमाई।

फिर आप जब वादिये

असफान के पास से गुज़रे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि0 से दरयाफ़्त फरमाया कि यह कौन सी वादी है? तो उन्होंने अर्ज़ किया वादिये असफान है तो आपने फरमाया इस वादी से हज़रत हूद (नबी) और हज़रत सालेह नबी सुर्ख ऊँटों पर बैठ कर गुज़रे हैं ताकि हज बैतुल्लाह से मुशर्रफ हों। फिर आप मकामे सरिफ पर पहुंचे (यह मक्का से 6 किलो मीटर पहले मक्का के रास्ते पर वाक़े है)

फिर आप मक़ामें ज़ीतूवा पर पहुंचे। वहां चार ज़िलहिज्जा इतवार की रात गुज़ारी और फज्र की नमाज़ अदा करके गुसल फरमाया और मक्का के लिए रवाना हो गए। मक्का में हुजून से करीब बुलन्द खाई में दिन के वक्त दाखिल हुए। इससे पहले आप उमरे के मौके पर नीचे के इलाकों से दाखिल हुऐ थे। फिर आप आगे बढ़े और चाश्त के वक्त मस्जिद में दाखिल हुए।

इमाम तबरी ने ज़िक्र किया है कि आप बाबे अब्द मुनाफ से जिसे बाब बनी शैबा कहा जाता है दाखिल हुए थे। इमाम अहमद फरमाते हैं कि आप जब दारे अली से दाखिल हुए तो बैतुल्लाह को सामने करके दुआ फरमाई। इमाम तबरी ने यह भी ज़िक्र किया है कि जब आप बैतुल्लाह को देखते थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते थे–

"ऐ अल्लाह इस घर को और ज़ियादा इज़्ज़त व अज़मत और बुज़ुर्गी और रोब अता फरमा" एक रिवायत में यह भी आया है कि जब आप बैतुल्लाह को देख कर हाथ उठाते, अल्लाहु अकबर कहते तो यह दुआ पढ़ते थे–

"ऐ अल्लाह तू सलाम है और तुझी से सलामती है हमें सलामती दे, ऐ अल्लाह इस घर को और ज़ियादा इज़्ज़त, करामत और रोब दे और जो इसका हज या उमरा करे उसे भी इज़्ज़त और नेकी अता कर"।

जब आप मस्जिद हराम में दाखिल हुए तो बैतुल्लाह के पास तशरीफ लाए और तहीयतुल मस्जिद नहीं पढ़ी क्योंकि यहां तवाफ ही तहीयतुल मस्जिद है। हजरे असवद के सामने हुऐ तो उसे चूमा और किसी को तकलीफ नहीं दी फिर दायीं जानिब चले कोई खास दुआ नहीं फरमाई। अलबत्ता दोनों रुकन के दरमियान आपसे यह दुआ पढ़ना साबित है–

अनुवाद– "ऐ हमारे रब हमें दुनिया में भी भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा" (अलबकरा–201)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तवाफ़ के तीन चक्करोंमें रमल क़िया यानी छोटे कदम रखते हुए चले और इज़्तिबा किया यानी दाहिना मोंढा खोल कर बाएं मोंढे पर चादर डाल दी इस तरह दाहिना कंधा खुला हुआ था और बायां ढका हुआ और आप जब हजरे असवद के सामने होते तो उसकी तरफ इशारा करते और उसे ख़मदार छड़ी से छू कर उसे बोसा देते थे।

जब आप तवाफ से फारिग हुए तो मकामे इब्राहीम के पीछे आए और यह आयत पढ़ी–मकामे इब्राहीम को मुसल्ला बना लीजिए।

(अलबकरा–125)

फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी नमाज़ से फारिग होने

के बाद हजरे असवद के पास तशरीफ लाए और उसका बोसा लिया। फिर सामने के दरवाज़े से सफा की तरफ निकल आए और करीब हो कर यह आयते करीमा तिलावत फरमाई—

अनुवाद— "सफा और मरवा अल्लाह की निशानियाँ हैं।" (अलबकरा—158)

फिर फरमाया मैं भी शुरु करता हूँ जिससे अल्लाह ने शुरु किया फिर कोहे सफा पर चढ़ कर बैतुल्लाह की तरफ रुख़ किया और यह दुआ पढ़ी—

अनुवाद—

"अल्लाह वाहिद के सिवा कोई खुदा नहीं उसकी अमलदारी है उसी के लिए तारीफ है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह वाहिद के सिवा कोई ख़ुदा नहीं उसने अपना वादा पूरा किया अपने बन्दे को फतहयाब किया और तमाम जमाअतों को तन्हा शिकस्त दी" इसी तरह तीन मरतबा यह दुआऐं फरमायीं और फिर "सई" करते हुए मरवा की तरफ चले नशेब में पहुंच कर दौड़ने लगे, जब वादी से निकल आए तो आदत के मुताबिक चलने लगे, जब मरवा पहुंचे तो उस पर चढ़ कर बैतुल्लाह का रुख़ करके अल्लाह तआला की तकबीर व तौहीद बयान की और जो सफ़ा पर दुआएं की थीं यहां पर भी कीं। जब सफ़ा व मरवा की सई से फारिग हो गये तो उन तमाम लोगों को जिनके साथ कुर्बानी के जानवर न थे हिदायत दी कि अब एहराम उतार दें और पूरी तरह हलाल हो जाएं, क्योंकि उमरे के अरकान पूरे हो गऐ और 8वीं ज़िलहिज्जा तक इस तरह रहें और चूंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कुर्बानी का जानवर था इसलिए अपनी निसबत फरमाया अगर पहले से यह मालूम होता तो कुर्बानी का जानवर हरगिज़ न लाता और सिर्फ उमरे का एहराम बांधता। उसी जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाल मुंडवाने वालों के लिए तीन मर्तबा और छोटे करने वालों के लिए एक मर्तबा दुआए मग़फिरत फरमाई।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा..............

को बयान फरमा कर क़िताल और खर्च करने को बयान फरमाना मुनासिब हुआ "और अल्लाह की राह में किताल करो" में पहले का बयान था तो "वह शख्स जो अल्लाह को कर्ज दे" मैं दूसरे का जिक्र है उसके बाद किस्स—ए—तालूत से पहले की ताकीद हुई, और अब "खर्च करो जो हमने तुमको रिज़्क़ दिया" से दूसरे की ताकीद मंजूर है और चूंकि माल खर्च करने पर बहुत से उमूर इबादत व मुआ़मलात के निर्भर हैं तो उसके बयान में जियादा तफसील और ताकीद से काम लिया, चुनांचि अब जो रुकूअ़ आते हैं उनमें अक्सरों में हुक्मे सानी यानी माल खर्च करने का जिक्र है मानी का खुलासा यह हुआ कि अमल का वक़्त अभी है आखिरत में तो न अमल बिकते हैं न कोई दोस्ती से देता है न कोई सिफारिश. से छुड़ा सकता है जब तक पकड़ने वाला न छोड़े।

4. यानी कुफ़्फ़ार ने खुद अपने ऊपर जुल्म किया जिसकी शामत से ऐसे हो गये कि आखिरत में न किसी की दोस्ती से उनको नफा हो सके और न सिफारिश से। ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

–हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुहर्रम तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न रीति-रिवाज–

इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से वर्ष का प्रथम माह मुहर्रम है। यह महीना इस्लाम से पूर्व भी तथा उसके बाद भी प्रतिष्ठा, सम्मान तथा मान मर्यादा का महीना समझा जाता था, और बहुत सी शुभ एवं मंगलमयी घटनायें 10, मुहर्रम को घटित हुईं। जिसमें से एक महत्वपूर्ण घटना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा बनी इसराईल का फ़िरऔन[1] के अत्याचार से छुटकारा पाना, मिस्र से निकल कर सीना प्रायद्वीप में कुशलता पूर्वक पहुंच जाना तथा फ़िरऔन का अपने लाओ लशकर सहित डूब जाना हैं। इसी की यादगार में मदीना मुनव्वरा के यहूदी आशूरा[2] (10, मुहर्रम) को रोज़ा रखते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा छोड़ कर मदीना मुनव्वरा पधारे तो आपने फ़रमाया कि हमारा सम्बन्ध हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से यहूदियों की अपेक्षा कहीं अधिक है, अतः हम को उनसे अधिक खुशी मनाने और शुक्र (कृतज्ञता) अदा करने का अधिकार है, आपने स्वयं रोज़ा रखा और मुसलमानों को रोज़ा रखने का आदेश दिया। रमज़ान के रोज़े (तीस अथवा उन्तीस) अनिवार्य होने से पूर्व यही रोज़ा मुसलमानों पर फ़र्ज था। जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा ऐच्छिक तथा नफ़्ल रह गया। अब भी संसार के विभिन्न भागों में धार्मिक मुसलमान यह रोज़ा रखते हैं और भारत के सुन्नी मुसलमानों में इसका प्रचलन है।

एक शोक पूर्ण घटना की याद और इससे सम्बन्धित विभिन्न वर्गों की रस्मे–

परन्तु इस मुबारक तथा उल्लासपूर्ण महीने के साथ जिससे वर्ष आरम्भ होता है, एक अशोभनीय, अभाग्यपूर्ण तथा शोकजनक घटना सम्बद्ध है, जिसको याद करके हर मुसलमान का हृदय दुःखी और उसकी गरदन शर्म से झुक जाती है। यह नवास–ए–रसूल, जिगर गोश–ए–बतूल, हुसैन बिन अली रज़ि० की शहादत है, जो ठीक आशूरे के दिन हुई वह इसी दिन यज़ीद के मुकाबले में लड़ते हुए (जो खिलाफ़त के तख्त पर आसीन हो गया था, और शाम में बैठ कर उस समय के इस्लामी संसार पर प्रशासन करता था) करबला के मैदान में 10, मुहर्रम सन् 60 हिज्री 22 अक्तूबर, सन् 679 ई0 को शहीद हुए, तथा उनके परिवार के अनेक युवक भी लड़ते हुए शहीद हुए। यही वह घटना है जिसकी यादगार में शिया हज़रात मुहर्रम में ताजिये तथा अलम निकालते

---

1. मिस्र का एक अत्याचारी सम्राट
2. अरबी भाषा में "आशूरा" दस की संख्या को कहते हैं।

हैं, मातम करते हैं, शोक प्रदर्शन हेतु मज्लिसें आयोजित होती हैं। मुहर्रम के प्रारम्भिक दस दिन और फिर सफ़र मास की 20, तारीख जो चेहल्लम कहलाती है, इसी शोक प्रदर्शन तथा मातम–व–शेवन में गुज़रती है। ईराक तथा ईरान में जहां शिया सम्प्रदाय की बड़ी संख्या है और अवध में जहां एक सौ छत्तीस वर्ष तक शिया खानदान की हुकूमत रही है, और उसमें से विशेष कर लखनऊ में मुहर्रम की बड़ी धूम धाम और उससे सम्बन्धित रीतियों का आयोजन होता है। मुहर्रम की रीतियों में (जैसा कि समस्त स्थानीय रीतियों का दस्तूर है) हर जगह स्थानीय विशेषताएं विद्यमान हैं। कहीं ताजियादारी का बड़ा ज़ोर है, कहीं कम। मातम और शोक प्रदर्शन के रूप भी विभिन्न हैं। कहीं इस बारे में परिवर्तन एवं सुधार किये गए हैं और कहीं पुरातन परिपाटी अब भी प्रचलित हैं, और उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

सुन्नी मुसलमान सामूहिक रूप से इन रस्मों में भाग नहीं लेते, उनका दृष्टिकोण मुहर्रम के बारे में अपने शिया भाइयों से पूर्णयता भिन्न है। वह हज़रत हुसैन रज़ि0 द्वारा उठाए गये पद को सत्यपक्षी, उचित, पुरुषत्व, साहस, वीरता, निर्भीकता और पराक्रम का एक अद्वितीय एवं अनुपम कारनामा समझते हैं। उनको वह हर प्रकार से उत्पीड़ित एवं क़ातिलों और विरोधियों को अत्याचारी समझते हैं, परन्तु उनके अनुसार अपनी भावनाओं एवं संवेगों को प्रदर्शित करने की यह रीति एवं पद्वति इस्लाम की प्रवृत्ति के विरुद्ध और उनके लिए निरर्थक एवं लाभ रहित है, जिनके नाम पर यह सब कुछ मनाया जाता है। वह केवल बखशिश की दुआ और पुण्यात्मक कार्यो पर बस करते हैं। और उनके आदर्श से वास्तविक लाभ उठाना और सत्य पर जमे रहने तथा असत्य के सामने डट जाने को उनकी शहादत का मूल सन्देश समझते हैं। अतः उनमें से धार्मिक सिद्धान्तों पर जीवन व्यतीत करने वाले लोग और जो अपने विश्वासों तथा धार्मिक शिक्षा से भली भांति अवगत हैं, वह इन रीति रिवाजों से पृथक रहते हैं, लेकिन मुसलमान जन साधारण की एक बहुत बड़ी संख्या अब भी बहुत स्थानों पर बड़े धूम धाम से ताज़ियादारी करती है, और उनके स्थानों पर ताज़ियादारी की शोभा उन्हीं के दम से क़ायम है। इन सुन्नी मुसलमानों ने कतिपय स्थानों पर अपने अपने विचारों में अपनी विशेषता बनाए रखी है और वह दम–ए–चार यार का नारा बुलन्द करते हैं।

शबे–बराअत में मुसलमानों की परम्परा–

ईदों, 12 रबीउलअव्वल तथा मुहर्रम के बाद फिर सबसे प्रसिद्ध और सार्वजनिक त्योहार शब्बरात[1] का है। यह इस्लामी कलेण्डर के अनुसार आठवें महीने की पन्द्रहवीं रात को होती है। मुसलमानों में इसके सम्बन्ध में इस प्रकार

---

1. वास्तव में यह शब्द शबे–बराअत (छुटकारे की रात) है परन्तु सर्वसाधारण इसे शब्बरात कहते हैं, अतः इसी रूप में इसे लिखा जा रहा है।

इस्लामी निष्ठा है, कि इस रात में हम सबका पैदा करने वाला एवं पालनहार मनुष्यों के प्रति अगले वर्ष के लिए आयु, रोज़ी और सौभाग्य एवं दुर्भाग्य का निर्णय करता है अतः यह रात्रि दुआ एवं उपासना में बीताना चाहिए। बहुत से धार्मिक पुरुष तथा महिलायें 14, शाबान को रोज़ा रखती हैं और यह मुस्तहब[1] है। हिन्दुस्तान में इस दिन हलवा तैयार करने का आम रिवाज है और वह खाया खिलाया और मित्रों को भेजा जाता है[2]।

1. जिस क्रिया के करने में सवाब और न करने पर कोई दण्ड नहीं।

2. यह रस्म किस तरह और कहां से आरम्भ हुई? ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस का पता लगाना कठिन है। ऐसा कहा जाताहै कि पहली शताब्दी हिज्री के एक महान हज़रत उवैस करनी ने (जो रसूल के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम के बारे में प्रसिद्ध हैं, कुछ मजबूरियों के कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्शन एवं संगति से वंचित रहे) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम एवं भक्ति भाव में अपने दाँत तोड़ डाले थे (क्योंकि एक युद्ध के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र दांतों को आघात पहुँचा था) उनकी सहूलत के लिए उनके घर वालों ने हलवा तैयार किया था, उसी की यादगार में उसी दिन हलवा तैयार करने का प्रचलन है, परन्तु इस कहावत में अनेक त्रुटियां हैं और इसका ऐतिहासिक प्रमाण नहीं।

सूर्यास्त पश्चात् धार्मिक मुसलमान कुरआन शरीफ़ का पाठ करते हैं, अपने और अपनी औलाद तथा मित्रों के लिए दुआ करते हैं। बहुत से लोग इस रात क़ब्रिस्तान जाते हैं और अपने रिश्तेदारों, पूर्वजों तथा मित्रों की क़ब्रों पर फ़ातिहा पढ़ते हैं और उनकी बख़्शिश के लिए दुआ करते हैं। वैधानिक रूप से निषिद्ध होने पर भी नगरों में इस दिन महिलाओं के क़ब्रिस्तान जाने का रिवाज़ भी होता जा रहा है।

एक नितान्त अनुचित, अशुद्ध तथा इस्लामी परम्परा के विरुद्ध क्रिया–

इस धार्मिक त्योहार की सबसे विचित्र तथा अशोभनीय विशेषता एवं रिवाज, आतिशबाजी है, जो केवल हिन्दुस्तान की विशेष उपज है। इस रात में लाखों रूपये आतिशबाज़ी में फूंक दिये जाते हैं और एक कहावत, ''घर फूंक कर तमाशा देखना'' को वास्तविक रूप प्रदान किया जाता है। विद्वानों द्वारा विरोध प्रकट करने तथा सुधारात्मक परामर्श देने के उपरान्त भी इस, इस्लामी विचारधारा के विपरीत प्रथा, में कोई विशेष कमी नहीं आई है। हिन्दुस्तान के अतिरिक्त कहीं और इस रिवाज के न होने से ऐसा आभास होता है कि कदाचित यह दीवाली का अनुकरण मात्र है।

जुमअ़तुलविदा (अलविदा) का वार्षिक समारोह और नमाज़ का विशिष्ट रूप से आयोजन–

जुमअ़तुल विदा[1] ने भी एक त्योहार तथा वार्षिक समारोह का रूप धारण कर लिया है। रमज़ान–ए–मुबारक (रोज़ों का मास) के अन्तिम जुमा को जुम–अतुल विदा कहते हैं। उस दिन स्नान, नमाज़ तथा नगर की सबसे बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का मुसलमान विशेष आयोजन करते हैं। दूर दूर के देहातों, गांवों तथा कस्बों से लोग निकट नगर में नमाज़ पढ़ने के लिए आते हैं, विशेष

1. चूंकि रमज़ान का यह अन्तिम जुमा होता है और रमज़ान की हर घड़ी महत्व रखती है, अतः ऐसा आभास होता है कि यह आदरणीय तथा पवित्र अतिथि अब विदा हो रहा है। इसीलिए इसे जुम अतुल विदा कहते हैं। अनु0

रूप से दिल्ली की जामा मस्जिद में बहुत बड़ी जमाअत होती है। जिसमें सम्मिलित होने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग दूसरे नगरों तथा दूरस्थ स्थानों से आते हैं और वह इस प्रकार से ईद की नमाज़ समान मालूम पड़ती है। इस्लाम के प्रारम्भिक काल में इस समारोह का कोई संकेत नहीं मिलता, और हदीस व फ़िक्ह में इसका कोई उल्लेख नहीं।

कुछ और एतिहासिक दिवस तथा उनसे सम्बन्धित रिवाज–

27, रजब[1] का दिन भी मुसलमानों में पवित्र समझा जाता है। सामान्य रूप से यह मशहूर है कि इस दिन पैग़म्बर–ए–इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेराज[2] हुई थी। इसना अशरिया (शिया) सम्प्रदाय के लोग भी सत्ताइसवीं रात्रि को महत्व देते हैं और उस दिन दीवाली के समान रोशनी करते हैं, क्योंकि इसी तारीख़ को हज़रत अली रज़ि0 का जन्म हुआ था। 11, रबीउस्सानी[3] को बड़े पीर साहब हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह, जो इस्लाम के सुप्रसिद्ध बुजुर्ग तथा आध्यात्मिक नेता हैं, की ग्यारहवीं की जाती है। इस दिन मिठाई या खाने पर उनका फ़ातिहा होता है, लोग दावतें भी करते हैं[4]।

कुछ विशुद्ध हिन्दुस्तानी मुसलमानों के उत्सव–

उन त्यौहारों के अतिरिक्त जो किसी न किसी रूप में हिन्दुस्तान के बाहर भी पाये जाते हैं, और उनका कुछ न कुछ महत्व है, कुछ ऐसे उत्सव भी हैं जो बिल्कुल हिन्दुस्तान की उपज हैं और देश के बाहर उनकी कोई परिकल्पना नहीं। यथा रजबी जिसमें लगभग साठ, सत्तर वर्ष से कूंडों का रिवाज़ हुआ है[5], नौ चन्दी जुमेरात (मास का प्रथम बृहस्पतिवार) और वह मेले जो हिन्दुस्तान के बुजुर्गों के मज़ारों पर प्रत्येक वर्ष लगते हैं, जैसे ग़ाज़ी मियां का मेला, जो बहराइच में लगता है और अन्य बुजुर्गों के उर्स जिनकी एक लम्बी सूची है, और जिनमें सबसे अधिक जन प्रिय तथा प्रसिद्ध उर्स अजमेर का है, जो रजब मास की पहली से छः तारीख तक होता है, और दूर दूर से यात्री इसमें सम्मिलित होने के लिए आते हैं। मुसलमानों की वे संस्थाएं जो विशुद्ध इस्लामी दृष्टिकोण रखती हैं और प्रत्येक क्रिया के लिए क़ुरआन, हदीस तथा इस्लाम के प्रारम्भिक काल का उदाहरण प्रमाण तथा तर्क के रूप में मांगती हैं, इन मेलों तथा उर्सों के विरुद्ध हैं। सम्भवतः भारत की प्राचीन परम्परा और यहां की जीवन विधियों ने भी इन हम पल्ला मेलों तथा उत्सवों को विराट तथा वैभवशाली ढंग से मनाने में पथ प्रदर्शन किया।

---

1. इस्लामी कलेण्डर का सातवां मास।
2. इस रात्रि में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह तआला से भेंट तथा बात चीत हुई। इस भेंट को मेराज कहते हैं।
3. इस्लामी कलेण्डर का चौथा मास।
4. देव बन्दियों तथा सुन्नत पर अधिक बल देने वाले लोग इस प्रचलित रसम से सहमत नहीं, विस्तार से इस सम्बन्ध में प्रकाश डालने का यहां समय नहीं।
5. मैं ऐसे वृद्ध जनों तथा दीर्घायु के व्यक्तियों को जानता हूं जिनके समय में यह रस्म आरम्भ हुई, और वह बताते हैं कि इसका प्रारम्भ किस प्रकार हुआ, और किस प्रकार देखते देखते यह प्रथा फैल गई।

❖❖❖

तालीम व तरबीयत मुफ़ीद व मुअस्सिर कब?
शिक्षा दीक्षा लाभदायक तथा प्रभावी कब?

—मौलाना तक़ी उस्मानी

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम व तरबीयत, जिसने दुशमनों तक के दिल जीते और जिसने एक वहशी क़ौम (असम्भव क़ौम) को बामे उरूज़ (सभ्यता की ऊँचाइयों) तक पहुंचाया उसकी सबसे बुन्यादी खुसूसीयत (विशेषता) यह थी कि वह तालीम महज़ एक फिक्र व फलसफा न थी जिसे खूबसूरत अल्फ़ाज का खोल चढ़ा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों के सामने पेश कर दिया, बल्कि एक मुतवातिर और पैहम (लगातार) अमल से इबारत थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर अदा मुजस्सम तालीम थी, आज अगर हम असातिज़ा (गुरुजनों) की तालीम, वाइज़ों के वअ़ज़ और खतीबों की तक़रीरें नताएज के एतिबार से बेजान और इस्लाहे मुआशरा (समाज सुधार) के अजीम काम के लिए बे असर नजर आती हैं तो उसकी बुन्यादी वजह यही है कि आज हमारे मुअल्लिमों (गुरुओं) वाइजों और खतीबों (वक्ताओं) के पास सिर्फ दिलकश (मनमोहक) अल्फ़ाज़ और खुशनुमा फलसफे (आकर्षक दर्शन) तो ज़रूर है लेकिन जिन्दगी उन दिलकश अलफ़ाज़ और खुशनुमा फलसफों से यकसर विपरीत है ऐसी तालीम व तरबीयत न सिर्फ यह कि कोई मुफीद असर नहीं छोड़ती बल्कि बसाऔक़ात (बहुधा) उसका उल्टा असर यह होता है कि सुनने वाला सख़्त जेहनी कशमकश (मानसिक असमंजस) और फिक्री इन्तिशार (अव्यवस्था) का शिकार हो कर रह जाता है, उस्ताद का बयान किया हुआ फलसफा और मुकर्रिर की धुआंधार तकरीरें एक महदूद वक्त तक इन्सानों को अपनी तरफ मुतवज्जेह ज़रूर कर लेती हैं और बहुत ज़ियादा हुआ तो अक़्ल उनकी सिहत को तस्लीम कर लेती है (उनकी शुद्धता को मान लेती है) लेकिन दिलों को मुतअस्सिर करने और जिन्दगी की काया पलटने का अजीब काम उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक मुअल्लिम की तालीम और वअ़ज़ खुद उस की अपनी ज़िन्दगी में अमली तौर पर रचा बसा हुआ न हो। ❑❑

यह कैसी आज़ादी है?

—मौलाना मो0 खालिद नदवी

—हाशमा अन्सारी

आज़ादी वह सुन्दर शब्द है जिसकी क़द्र व क़ीमत का अन्दाज़ा सूरज की सुनहरी किरणें गुलिस्तान में चलने वाली नर्म व नाजुक हवा और खिलने वाली कलियां ही लगा सकती हैं। आज़ादी का मतलब सिर्फ राजनैतिक आज़ादी नहीं होता बल्कि जनता को यह हक होता है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपनी मरजी से आ जा सके। इस तरह आज़ादी और जम्हूरियत (प्रजातंत्र) हममाने हैं। प्रजातन्त्र की भलाई के लिए अमन और कानून और उन का निफ़ाज (जारी होना) ज़रूरी है। आज़ादी वह हसीन तसव्वुर (विचार) है जिसे बरक़रार रखने के लिए बहुत कुछ कुर्बान करना पड़ता है, यह पूरी क़ौम का फ़ैसला होता है। पूरे मुल्क़ की ज़िम्मेदारी होती है कि वह इस मुक़द्दस (पवित्र) विरासत को प्रकाशमान (रौशन) रखे।

लेकिन आज़ादी के पहलू में फाक़ः मस्त (जो फाकों में भी मस्त रहे) जनता की परेशानी सुनने वाला कौन है? वह औरत जिसका सुहाग लुट गया है, जिसके करीबी रिश्तेदार का खून हुआ है, जिसको सरे आम बेइज्ज़त किया गया, सामूहिक बलात्कार किया गया हो, वह जिन्दगी की भीख माँगती रहें, लेकिन अपने आज़ाद देश में उन्हें ज़िन्दा जला दिया गया उन भयानक दृश्यों को शब्दों में बयान करना भी मुश्किल है। फिर उन्हीं मासूम लोगों पर ही जुल्म ढाया जा रहा है, उन्हीं पर कानून का शिकंजा कसा जा रहा है, उनके खिलाफ हर मुमकिन कोशिश की जा रही है, क्या आज़ादी का यही मतलब है।

इस देश की आज़ादी के लिए बहुत से मुस्लिमों के हाथ खून से रंगे हुए हैं। मुल्क आज़ाद हुआ, इस की आज़ादी में सबसे ज़ियादा खून मुसलमानों का बहा, उन्हीं को फाँसी पर लटकाया गया। और जब आज़ादी मिली तो उनकी ही आजादी ख़त्म करने की हर मुमकिन कोशिश की जाती रही है, देश में बहुत बड़े बड़े भयानक दंगे कराये गये। ताकि मुसलमान पूरी तरह कंगाल व बर्बाद कर दिये जायें, आज़ादी के समय मुसलमानों के लिए 30 प्रतिशत नौकरियाँ थी, लेकिन आज घटते—घटते 2 प्रतिशत भी नहीं रह गयीं।

मस्जिदों व मकबरों को शहीद किया जा रहा है तीन सौ मस्जिदों को निशाना बनाया, कुर्आनपाक की आयतों में संशोधन, व काट छाँट की बातें कही जा रही हैं, मुस्लिम पर्सनल ला के खिलाफ यूनीफार्म सिविल कोड को मैदान में उतारने की पूरी तैयारी हो चुकी है। दफा 370 के खिलाफ ग्रुपबाजी की जा रही है, जिसकी तारीखी हैसियत से भेदभाव किया जा रहा है। जम्मू कशमीर के शासक राजा हरी सिंह ने 560 महाराजा और नवाबों के प्रतिकूल हिन्दूस्तानी

शेष पृष्ठ ....24.. पर

इख़्लास और उसके बरकात व फ़ायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

अंबिया की सुहबत (संगति) के लिए ईमान और औलिया की सुहबत के लिए इख़्लास शर्त–

सुहबत (संगति) में शर्त है कि इख्लास हो, अगर इख्लास से नहीं आयेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा, अंबिया की सुहबत में रहने वालों के लिए बस ईमान शर्त है, आये और कहा हम ईमान लाये अल्लाह पर, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उन तमाम चीजों पर जिनका हुक्म दिया गया है, बस उनका काम हो गया। लेकिन औलिया–ए–किराम रह0 की सुहबत में रहने के लिए इख्लास शर्त है, अगर इख्लास के साथे रहेगा तो फायदा होगा, अगर इख़्लास नहीं तो चाहे एक हज़ार साल रहो तब भी फायदा नहीं, और क्योंकि उनकी सुहबत से जो सबसे अहम बात पैदा होती है वह है दिल और दिमाग़ के अन्दर यकीन की कैफ़ियत का पैदा हो जाना, यह बिना इख़्लास हासिल नहीं होता, इसीलिए एक "ताबई" (जिसने किसी सहाबी को देखा हो) ने अपने शागिर्दों से कहा कि अगर तुम सहा–बए–किराम रज़ि0 को देखते तो उन्हें पागल, दीवाना समझते, और सहा–बए–किराम रज़ि0 तुम लोगों को देख लेते तो बेईमान समझते, यानी सहा–बए–किराम रज़ि0 दीन के काम और उस पर अमल करने के लिए इतने बेचैन रहते थे कि लोग समझते थे कि क्या हो गया, न इनको खाने–पीने का ध्यान, न बीवी बच्चों का, न किसी चीज़ का, बस वह हुक्म का पालन करने और फ्राइज़ की पाबन्दी करने वाले थे उसमें कोताही नहीं करते थे। ऐसे वाक़िआत भी हुए कि निकाह हुआ, बीवी के पास रात गुजारी कि जिहाद का एलान हो गया तुरंत जिहाद को चले गये, और शहीद हो गये, फिरिश्तों ने उन्हें गुस्ल दिया, उनका नाम "गसीलुल्मलाइका" पड़ गया कि मलाइका ने आकर गुस्ल दिया, सहा–बए–किराम रज़ि0 का जो मुआमला था वह सिर्फ रसूले पाक सल्ल0 की सुहबत का नतीजा था। बहरहाल सुहबत का असर तो पड़ता ही है, इसलिए हमको, आपको किस की सुहबत में रहना है इसको चेक करना पड़ेगा कि वह कैसा है? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 व हज़रत उमर रज़ि0 रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ ले जाने के बाद एक जगह अफसोस में बैठे थे, फिर कहा चलो अम्माँ के पास चलते हैं, हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि0 हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में रही हैं और बरकतें हासिल की हुई हैं और ऐसी बा बरकत खातून कि जब उन्होंने मक्के से मदीने हिज़रत की, अकेले रास्ते में प्यास की शिद्दत

(जियादती) से तड़प गयीं, नाम भी उनका बा बरकत और हैं भी बरकत वाली, तो अल्लाह तआला ने पानी का ड़ोल आसमान से भेजा, लटक कर नीचे आया उसमें से उन्होंने पानी पिया, पूरी जिन्दगी फिर उन्हें प्यास ही नहीं लगी, ऐसी बा बरक़त ख़ातून हैं, तो दोनों यानी हज़रत अबू बक्र व हज़रत उमर रज़ि0 उनकी खिदमत में गये, वह रोने लगीं, अबू बक्र व उमर रज़ि0 ने कहा अम्माँ क्यों रोती हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो बहुत ऊँचे मकाम पर हैं दुन्या से रुख्सत हो गये लेकिन जन्नत के आला दर्जे में हैं, फरमाया इसलिए नहीं रो रही हूं, फिर क्यों रो रही हैं? कहा मैं इसलिए रो रही हूँ कि "वही" का सिलसिला बंद हो गया, वही की कीमत जानती थीं, "वही" क्या चीज़ है? इस वजह से वह हज़रत उम्मे ऐमन की खिदमत में हाजिर होते थे।

हमारे हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 की वाल्दा माजिदा भी माशा अल्लाह क्या खातून थीं, अल्लाह तआला ने उनको कैसा नवाजा था, पूरे घर के लोग उनके पास जा कर बैठा करते थे क्योंकि एक रूहानी सुकून उनके पास मिलता था, सुब्ह 2:30 बजे उठ जातीं, इशराक़ तक अपने मुसल्ले पर बैठ कर अवराद व वजाइफ में लगी रहती थीं, और यह उनका मामूल आखरी उम्र यानी 93 साल तक था, और जाहिर सी बात है कि वह अल्लाह के सामने रोती, गिड़गिड़ाती थीं, ख्वाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, और उनसे सीधे बैअत हुई, तो अल्लाह तआला ने बहुत ऊँचा मक़ाम उनको अता फरमाया था। तो जाहिर है कि उनके पास बैठना, उनकी खिदमत में हाजिर होना कितनी बड़ी बात है, उनकी खिदमत में बैठने से असर पड़ता था, हमारे हज़रत मौलाना रह0 उन्हीं की सुहबत में रह कर बड़े हुए।

हदीस में आता है कि आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है कोई चाहे माने या न माने आप चोर के साथ रहेंगे तो चोरी न सही, हेरा फेरी तो करेंगे ही, आप झूठे के साथ रहेंगे तो झूठ न सही, बात तो बढ़ा चढ़ा कर करेंगे ही, कितना ही अपने आपको बचायें, इसलिए इस बात को तै करना चाहिए कि हम को अच्छों की सुहबत इख्तियार करना है, और अच्छे लोगों से दोस्ती करना है, उलमा की सुहबत में बैठना है और वाक़ई जिनके अन्दर कमाल है उनके पास जा कर बैठें, अब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो जितना मुशाबेह होगा, जितना जियादा सुन्नतों पर अमल करने वाला होगा उतनी ही जियादा उसकी सुहबत का नफा और बरकत बढ़ती जायेगी और खूब समझ लीजिए उसके अन्दर करामतें जितनी भी हों अगर सुन्नत की इत्तिबा व पाबंदी नहीं है तो न बरकत होगी, न नफा, और न तासीर।

........जारी..........

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः लड़की हिन्दुस्तान में है और लड़का अमरीका में, लड़का हिन्दुस्तान नहीं आ पा रहा है दोनों शादी करना चाहते हैं, क्या टेलीफोन या इन्टरनेट से निकाह की कोई सूरत हो सकती है?

उत्तरः निकाह में दो मुस्लिम गवाहों के सामने ईजाब व क़ुबूल एक ही मजलिस में होना जरूरी है जो टेलीफोन या इन्टरनेट से असम्भव (नामुमकिन) है अलबत्ता लड़का हिन्दुस्तान में अपने किसी जानकार को अपने निकाह का वकील बना दे यह वकील दो मुस्लिम गवाहों के सामने लड़की या लड़की के वकील से ईजाब व क़ुबूल करे इस तरह निकाह हो सकता है लेकिन यह बात ध्यान में रहे कि लड़की और लड़का दोनों एक दूसरे को जानते हों, गवाहान भी जानें कि वह किसके निकाह के गवाह हैं। अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने इस तरह के निकाह को जाइज लिखा है। (रद्दुल मुहतारः 63/3)

प्रश्नः निकाह के लिए लड़की से इजाजत लेने की अच्छी सूरत क्या है?

उत्तरः अच्छा यह है कि बाप अपनी बेटी से निकाह के वक्त या उससे पहले ही इजाजत ले ले और वह काज़ी को अपनी बेटी के निकाह का वकील बना दे। अगर बाप न हो तो लड़की का कोई महरम लड़की से इजाजत लेकर काजी को वकील बना दे।

अगर लड़की से इजाजत के वक्त वहां दूसरी औरतें बैठी हों और वह इजाजत लेने वाले की महरम न हों तो वह पर्दा कर लें।

लड़की से इजाजत के वक्त बाप या कोई वली इजाजत ले रहा हो तो दो गवाहों की जरूरत नहीं अलबत्ता कोई दूसरा इजाजत ले रहा हो तो साथ में दो गवाह ले ले।

काजी खुद इजाजत ले सकता है मगर ज़रूरी नहीं, कोई भी इजाजत ले कर काजी को निकाह का वकील बना दे।

प्रश्नः निकाह से पहले लड़का अपनी होने वाली बीवी को देख सकता है या नहीं? अगर देख सकता है तो किस हद तक?

उत्तरः इस्लाम में निकाह से पहले लड़के को इजाजत है कि वह चाहे तो अपनी मंगेतर को देख सकता है हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से फरमाया कि अगर तुम किसी औरत को पैग़ाम दो तो अगर हो सके तो उसके आवश्यक अंगों को देख लो (सुनने अबी दाऊद)।

रही बात कि लड़की के किन अंगों को देखा जा सकता है तो जमहूर फुकहा ने लिखा है कि आवश्यक होने पर सिर्फ मुखड़ा और हथेलियाँ देख सकते हैं दूसरा कोई अंग न देखें। (देखिये हिदायाः 459/2 और फत्हुल बारीः 157/9)

शेष पृष्ठ ....31.. पर

अरंड ख़रबूज़ा (पपीता) और हल्दी

—प्रस्तुतिः फ़ौजिया सिद्दीक़ा

अरंड ख़रबूज़ा अध पका पचास ग्राम के बारीक टुकड़े करके 250 ग्राम सिरके में डालें और उसी में मूली (बारीक तराशी हुई) 25 ग्राम, अदरक (बारीक तराशा हुआ) 15 ग्राम, इंजीर 15 ग्राम, पुदीना ख़ुश्क, कलौंजी, सुहागा भुना हुआ, नौशादर, राई, मिर्च सियाह, नमक लाहोरी, सज्जी हर एक, तीन ग्राम बारीक पीस कर शामिल करें और खाना खाने के बाद पाँच–पाँच ग्राम चाट लिया करें, बढ़ी हुई तिल्ली चंद रोज़ के इस्तेमाल से घुल जाती है।

अरंड ख़रबूज़े की दुधया रुतूबत दाद पर लगाने से उसको दूर कर देती है, इस रुतूबत के लगाने से दाद पर जख़्म हो जाता है जो चंद रोज में अच्छा हो जाता है और दाद जाता रहता है। अरंड खरबूजे की दुधया रुतूबत पेट के कीड़ों, केचुओं और कद्दू दानों को मार डालती है, कच्चे फल की दुधया रुतूबत पाँच ग्राम ले कर उसको शहद ख़ालिस दस ग्राम के साथ मिलाएं, फ़िर उसमें गरम पानी पचास ग्राम मिला कर ठंडा होने पर पिलादें, दो घंटे के बाद अरंडी का तेल पिलाएं, पेट के तमाम कीड़े ख़ारिज हो जाएंगे।

ये दुधया रुतूबत आला दर्जे की हाजिमे ग़िज़ा भी है कच्चे अरंड ख़रबूज़े का छिलका छीलने से जो रुतूबत निकले उसको एक गाढ़े कपड़े पर लगाते रहें, ताकि उसकी रुतूबत कपड़े में जज़्ब हो जाए और ऊपर सफेद सफूफ रह जाए उसको खुश्क कर के रख दें, जरूरत के वक़्त उसको चार चावलों के बराबर तक थोड़ी शकर मिला कर खाने के बाद दें खाना खूब पचेगा और भूक ख़ूब लगेगी।

हल्दीः

हल्दी बहुत से लाभ रखती है, हल्दी खाँसी में बहुत लाभ देती है उसको आग में भून कर बारीक पीस लें और एक ग्राम गुनगुने पानी के साथ खायें बलग़म वाली खाँसी चार पाँच दिन प्रयोग करने से ठीक हो जाती है।

हल्दी चोट के दर्द और सूजन को दूर करती है चोट बाहर की हो या अन्दर की हल्दी को पीस कर एक गिलास दूध में मिला कर पिलायें और हल्दी और चूना (पका हुआ) बराबर बराबर मिला कर चोट की जगह पर लगायें बड़ी लाभदायक दवा है। इससे दर्द दूर हो जाता है और सूजन उतर जाती है।

हल्दी सुज़ाक (मधुमेह) में भी लाभ देती है, हल्दी और आँवला खुश्क बराबर बराबर पीस कर छान लें उसमें बराबर वजन में खाण्ड (कच्ची शकर) मिला कर सात ग्राम पानी या दूध के साथ सात दिन तक खायें।

हल्दी पेट के कीड़ों को मारती है इसके लिए हल्दी को पानी में उबाल कर पीलाते हैं या उसका चूर्ण बना कर मर्ग पानी में मिला कर पीलायें।

जब जुकाम में नाक से कई दिन तक पानी बहता रहे तो हल्दी को आग पर रख कर उसका धुआँ नाक में और

मुँह के अन्दर पहुँचायें पानी का बहना बन्द हो जाता है और जुकाम ठीक हो जाता है।

हल्दी नेत्रों की ज्योति को बढ़ाती है, जाला और फूल को काटती है, हल्दी की एक छोटी गिरह लेकर लेमूँ चीर कर उसमें भर कर रख दें यहाँ तक कि लेमूँ सूख जाये इसी तरह तीन बार लेमूँ में वही हल्दी रख कर सुखायें अब इस हल्दी को दो तीन बूंद पानी खरिल में डाल कर घिसें और सलाई से आँखों में लगायें।

दुखी आँख में भी हल्दी लाभ देती है हल्दी पीस कर पानी में उबाल कर छान लें यह पानी आँखों में टपकायें आँखों की लाली जाती रहती है और दर्द भी दूर हो जाता है।

(देहाती मुआलिज से ग्रहीत)

❖❖❖

यह कैसी आज़ादी.............

विफाक (संघ) में देर से शामिल होने का फैसला किया था, जबकि उस राज्य की अधिक जनसंख्या मुसलमानों की थी। महाराजा ने सिर्फ तीन विभाग मुसलमानों को सौंपे थे। 1. रक्षा 2. विदेशी नीति 3. सूचना एवं प्रसारण विभाग। रियासत के काफी विभाग अपने पास रखे थे। धारा 370 इसी की दस्तावेज़ी शक्ल है। क्या इसको खत्म कर देना आज़ादी है? न्याय के गलियारों से भी अन्याय की आवाज़ आ रही है। क्या यही आज़ादी है?

देश आज़ाद होने पर जनता ने सोचा था कि आज़ाद हिन्दुस्तान पूरी दुनिया में लोकतंत्र का झण्डा ऊँचा करेगा, न्यायिक रूप से लोकतन्त्र को लागू करेगा लेकिन स्थिति यह है कि लोकतंत्र का मज़ाक उड़ाया जा रहा है। अलगाववादियों के देवता इसको निगल जाना चाहते है। मुजफ़्फ़रनगर में गरीब, दंगे से पीड़ित शरणार्थियों को सरकारी ज़मीनों पर बसने का हक़ भी नहीं दिया जा रहा है। उनकी बे सहारा दहलीज़ों को गिराया जा रहा है। क्या यही आज़ादी है? अपने देश, अपनी हुकूमत का नंगा नाच कब तक चलता रहेगा? हम आज़ादी की तरफ जोश के साथ बढ़ रहे थे कि—

आज़ादी एहसास की नेमत।
आज़ादी अफ़कार की नेमत।।
आज़ादी का कहना क्या है।
आज़ादी अल्लाह की रहमत।।

आज़ादी मिली तो इसकी मस्त हवाओं में उतर कर गुनगुनाने लगे कि आओ—

आज़ादी का जश्न मनाएं।
आज़ादी के नग़मे गाएं।।
जोश दिलों में भर देती है।
आज़ादी की मस्त हवाएं।।

लेकिन आज आज़ादी के तसव्वुर से होश उड़े चले जा रहे हैं क्योंकि आज आज़ादी डाकुओं को है, अपहरणकर्ताओं को है, रिश्वत खोरों को है, ज़ालिमों को है। भरे बाज़ार में दुकानें लुट रही हैं और कोई पकड़ा नहीं जाता। प्रशासन, माफियों के शिकंजों में है वह उफ़ तक नहीं कर सकता। ऐसे में जनता का क्या पूछना उसके अन्तःदुखः का अन्दाज़ा कौन लगाए।

अच्छे दिनों की आस में जनता ने बढ़ चढ़ कर वोटिंग की, उम्मीदों के इन्द्रधनुष के रंगों में पूरा देश डूबता रहा लेकिन उम्मीदों के आसमान में यह सब सराब (धोका) साबित हुआ। आगे आगे देखिए होता है क्या।

हाय नाकामी मताए कारवां जाता रहा
कारवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा।

❑❑

बख़्शिश की दुआ

—इदारा

या रब मैं गुनहगार मुझे बख़्श दीजिए तौबा हज़ार बार मुझे बख़्श दीजिए
माबूद फक़त तू है ईमान है मेरा लेकिन हूँ ख़ताकार, मुझे बख्श दीजिए
ईमान नबी पर है उन पर मेरे सलाम या रब हों सद हज़ार, मुझे बख्श दीजिए
खुलफाए राशिदीन से रखता हूँ महब्बत सुन्नी हूँ आशकार, मुझे बख़्श दीजिए
अबनाए नबी और बनातुन्नबी सभी हैं मेरे वह सरदार मुझे बख़्श दीजिए
अज़वाजे नबी माएं हैं मेरी वह सब की सब मैं उनका ताबेदार, मुझे बख़्श दीजिए
अस्हाबे नबी से हुआ राज़ी तू ऐ खुदा आसी से ख़ताकार को भी बख़्श दीजिए
या रब नबीये पाक पर लाखों सलाम हों उम्मत है बे क़रार इसे सब्र दीजिए

❖❖❖

कठिन शब्दों के अर्थ—

बख़्शिश= क्षमा, गुनहगार= पापी, बख़्श दीजिए= मेरे पापों को क्षमा करके मुझसे राज़ी हो कर मुझे अगले स्थाई जीवन में जन्नत में स्थान दीजिए। तौबा= क्षमा याचना, माबूद= पूज्य, फ़क़त= केवल, ईमान= मानना, ख़ताकार= पापी, सद= सौ, खुलफाए राशिदीन= हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम, सुन्नी= अहले सुन्नत व जमाअत जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं और तमाम सहाबा का आदर व सम्मान करते हैं, आशकार= स्पष्ट, अबनाए नबी= नबी के बेटे, बनातुन्नबी= नबी की बेटियाँ, सरदार= नायक, अज़वाजे नबी= नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियां, ताबेदार= आज्ञाकारी, अस्हाबे नबी= वह लोग जिन्होंने अपनी आखों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में आप पर ईमान लाए।

आसी= पापी (परन्तु यहां यह कवि का छोटा नाम है जो कविता में प्रयोग होता है) उम्मत= नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी (मुसलमान), बेक़रार= व्याकुल।

–पिछले अंक से आगे

मानवता का स्तर (एक तक़रीर)

–मौ0 सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0

सबसे आवश्यक प्रश्न–

आप जब कोई काम करते हैं तो सबसे पहले इस बात का निश्चय करते हैं कि इसका उद्देश्य क्या है और इस सम्बन्ध में आपका उचित स्थान क्या है? दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसकी तह में यह आधारभूत तथ्य कार्य कर रहा है कि मनुष्य ने संसार में अपने को क्या समझा और उसको क्या स्थान प्राप्त है? यदि इसी बात का शुद्ध ज्ञान हो गया तो प्रत्येक कार्य ठीक होगा और अगर इसी स्थान पर भूल हो गई तो यह भूल होती ही चली जायेगी।

मनुष्य ईश्वर का प्रतिनिधि है–

मित्रो! इस्लाम ने हमें बताया है कि इन्सान दुनिया में खुदा का नायब, ख़लीफ़ा और दुनिया का ट्रस्टी (Trustee) है। संसार एक वक़्फ़ है और मनुष्य उसका प्रबन्धक। उसका दायित्व यहां का प्रबन्ध का काम है। संसार में छोटे बड़े बहुत से वक़्फ़ (धर्मार्थ दान) होते हैं। यह समस्त संसार, यह सारा जगत् एक महान वक्फ (Trust) है। यह किसी की व्यक्तिगत सम्पति नहीं, या किसी के बाप दादा की जागीर नहीं कि जिस प्रकार चाहे खाये उड़ाए। इस ट्रस्ट में पशु–पक्षी, नदी–पर्वत, सोना चाँदी, खाद्य पदार्थ और अनेक प्रकार की सांसारिक सामग्री विद्यमान हैं। यह सब मनुष्य को समर्पित की गई हैं, क्योंकि वह उनके स्वभाव एवं गुणों से अवगत है और वह उनके प्रति सहानुभूति रखने वाला भी है। मनुष्य स्वयं इस ट्रस्ट की मिट्टी से बना है और इसी धूलि का है और प्रबन्धक एवं व्यवस्थापक के लिए जानकारी तथा ज्ञान और सहानुभूति एवं सम्बनध दोनों अनिवार्य हैं। मनुष्य संसार के लाभ तथा हानि से भी अवगत है और उसके अन्दर उसकी आवश्यकतायें भी रखी गई हैं, अतः वह अच्छा ट्रस्टी बन सकता है।

उदाहरणार्थ किसी पुस्तकालय का व्यवस्थापक कार्य वही भली प्रकार कर सकता है जिसको विद्या से प्रेम हो और पुस्तकों से लगाव तथा रुचि हो। यदि किसी पुस्तकालय का प्रबन्ध किसी अज्ञानी तथा अनपढ़ के हाथों में दे दिया गया, भले ही वह सज्जन तथा सुशील व्यक्ति हो, वह अच्छा लाईब्रेरियन (Librarian) नहीं बन सकता। परन्तु जिसको विद्या से प्रेम होगा और पुस्तकों के प्रति रुचि, वह इसमें पर्याप्त समय व्यय करेगा, पुस्तकों की संख्या में उचित अभिवृद्धि करेगा और उसका विकास करेगा।

इसी प्रकार मनुष्य चूंकि इसी संसार का है, उसको इससे रुचि भी है और वह इसका आश्रित भी है, इससे परिचित भी है और इसके प्रति सहानुभूति रखने वाला भी। उसको इसी में रहना भी है और मरना भी। अतः वह इसकी पूरी देख भाल करेगा और ईश्वर द्वारा प्रदत्त सुख सामग्री को ठिकाने लगायेगा भी। यह कार्य उसके अतिरिक्त और कोई सुयोग्यपूर्ण कार्यान्वित नहीं कर सकता।

शेष पृष्ठ ....28... पर

पत्तियों में छिपा डायबिटीज का इलाज

—इदारा

यूं तो डायबिटीज को जड़ से मिटाना फिलहाल मुमकिन नहीं है। लेकिन लाइलाज समझकर इसे पूरी तरह से नजरअंदाज़ करना भी घातक है आयुर्वेद विशेषज्ञ फल, सब्जी और अलग—अलग पौधों की पत्तियों को ब्लड शुगर का स्तर नियंत्रित रखने और इनसुलिन के इस्तेमाल की शरीर की क्षमता बढ़ाने में कारगर मानते हैं।

जामुन की पत्ती— भारत, ब्रिटेन और अमेरिका में हुए कई अध्ययनों में जामुन की पत्ती में मौजूद 'माइरिलिन' नाम के यौगिक को खून में शुगर का स्तर घटाने में कारगर पाया गया है। विशेषज्ञ ब्लड शुगर बढ़ने पर सुबह जामुन की चार से पाँच पत्तियां पीस कर पीने की सलाह देते हैं। शुगर काबू में आ जाए तो इसका सेवन बंद कर दें।

नीम की पत्ती— आंत को ग्लूकोज सोखने से रोकने के अलावा नीम की पत्ती इनसुलिन के इस्तेमाल की शरीर की क्षमता भी बढ़ाती है। इसके सेवन को डायबिटीज की दवाओं पर निर्भरता घटाने में कारगर माना गया है। विशेषज्ञ रोज सुबह खाली पेट नीम की ताजी पत्तियां पीस कर उनसे एक चम्मच रस निकाल कर पीने की सलाह देते हैं।

करी पत्ता— करी पत्ते में मौजूद आयरन, जिंक और कॉपर जैसे मिनरल न सिर्फ अग्नाशय की बीटा कोशिकाओं को सक्रिय करते हैं, बल्कि उन्हें नष्ट होने से भी बचाते हैं। इससे ये कोशिकाएं इनसुलिन का उत्पादन तेज कर देती हैं। डायबिटीज पीड़ितों के लिए रोज सुबह खाली पेट 8—10 करी पत्ते चबाना फायदे मंद है।

तुलसी की पत्तियां— पाचन तंत्र को दुरुस्त रखने वाली तुलसी की पत्तियां अग्नाशय की बीट—कोशिकाओं की गतिविधियों को सुचारु बनाए रखती हैं। इससे ये कोशिकाएं सही मात्रा में इनसुलिन का उत्पादन करती हैं और ब्लड शुगर का स्तर काबू में रहता है। डायबिटीज पीड़ितों के लिए रोज सुबह खाली पेट 2 से 4 तुलसी पत्तियां चबाना फायदेमंद है।

आम की पत्तियां— विशेषज्ञ डायबिटीज के मरीज़ों को आम के सेवन से बचने की सलाह देते हैं, लेकिन इसकी पत्तियां बीमारी की रोकथाम में अहम भूमिका निभा सकती हैं। दरअसल, आम की पत्तियां ग्लूकोज सोखने की आंत की क्षमता घटाती हैं। इससे खून में शुगर का स्तर नियंत्रित रहता है। आम की पत्तियां सुखा कर पाउडर बना लें। खाने से एक घंटे पहले पानी में आधा चम्मच घोलकर पीएं।

पपीते की पत्तियां— एएलटी और एएसटी एंजाइम का स्तर घटाने में पपीते की पत्तियां कारगर हैं। इससे इनसुलिन के इस्तेमाल की शरीर की क्षमता बढ़ती है और ग्लूकोज तेजी से ऊर्जा में तब्दील होने लगता है। लिवर बढ़ने, किडनी खराब होने का खतरा कम करने में भी पपीते की पत्तियां असरदार हैं। रोज सुबह पपीते की 8 से 10 पत्तियां पानी में उबालकर पीएं।

गुरमर की पत्तियां– अग्नाशय में इनसुलिन का उत्पादन बढ़ाने वाली गुरमर की पत्ती उसकी कार्य क्षमता में भी इजाफा करती है। इससे ग्लूकोज के ऊर्जा में तब्दील होने की गति बढ़ती है। मीठे की तलब शांत करने में भी इसे बेहद असरदार पाया गया हैं विशेषज्ञ सुबह खाली पेट गुरमर की दो से तीन पत्तियां चबाने की सलाह देते हैं।

फल-सब्जी भी असरदार

करेला– इसमें मौजूद कैरेनटिन और मोमोरडिका जैसे यौगिक ब्लड शुगर घटाने में बेहद असरदार हैं।

कीनू– इनसुलिन का उत्पादन बढ़ाने वाली कोशिकाओं के निर्माण को रफ्तार देता है।

जामुन– जेमबोलिन आंत को ज्यादा ग्लूकोज सोखने से रोकता है।

प्याज और लहसुन– एडीपीएएस और एलिसिन जैसे यौगिकों से लैस। खून में शुगर का स्तर नियंत्रित रखते हैं।

भिन्डी– अल्फा ग्लूकोज़िडेज इंहिबिटर पाए जाते हैं, जो स्टार्च को ग्लूकोज में तब्दील होने से रोकते हैं।

बीज और मसालों का कमाल

आंवले के बीज– बीटा कोशिकाओं को इनसुलिन के उत्पादन के लिए उकसाने में असरदार है।

करेले के बीज– बीटा कोशिकाओं की सुरक्षा करता है। इनसुलिन का उत्पादन सुचारु रहता है।

जामुन का बीज– स्टार्च को ग्लूकोज में तब्दील होने से रोकते हैं। ब्लड शुगर नियंत्रित रहता है।

मेथी के बीज– ग्लूकोज सोखने की आंत की क्षमता घटाते हैं।

❖❖❖

मानवता का स्तर................

संसार के प्रबन्ध हेतु मनुष्य ही उचित है–

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को खुदा ने पैदा किया और पृथ्वी पंर अपना प्रतिनिधि बनाया। फरिश्ते जो पवित्र एवं पूर्णता आत्मसम्बन्धी प्राणी हैं, जो न पाप करते हैं और न पाप करने की प्रवृत्ति रखते हैं, बोले कि हे स्वामी! आप ऐसे को अपना प्रतिनिधि बना रहे हैं जो दुनिया में रक्तपात करेगा। हम तेरी गुणगान करते हैं और निरन्तर तेरी उपासना में व्यस्त रहते हैं, यह उपाधि हमें प्रदान कीजिए। ईश्वर ने उत्तर दिया तुम इस बात को नहीं जानते। खुदा ने आदम तथा फरिश्तों की परीक्षा ली। चूंकि आदम इसी धूलि के थे, उनको संसार का उपभोग करना था, उनके स्वभाव इसी के अनुकूल थे, अतः वह इसके एक–एक तत्व से परिचित थे, उन्होंने ठीक–ठीक उत्तर दिया। फरिश्तों को इन वस्तुओं से कोई सम्पर्क न था, अतः उत्तर न दे सके। इस प्रकार ईश्वर ने दिखा दिया कि संसार के प्रबन्ध तथा इस ट्रस्ट के अधिकारी होने के लिए, अपनी अनेक त्रुटियों तथा दोषयुक्त बातों के होते हुए भी, मनुष्य ही उपयुक्त है वरन् यह दोष तथा आवश्यकताएं ही उसको इस उपाधि के योग्य सिद्ध करती हैं। यदि इस संसार में फरिश्ते होते तो दुनिया की अधिकाँश सुखसामग्रियां व्यर्थ सिद्ध होतीं और उनका विकास एवं उन्नति कदापि न होती जो मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं एवं अभिलाषाओं की बिना पर की।

जारी..........

तबलीगे नबवी सल्ल० उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

(हुज़ूर सल्ल० के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी —अल्लामा सैय्यद सुलैमान *नदवी रह०*

इन्हीं खुदाई हिदायतों की तामील में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआ़ज बिन जबल रज़ि० और अबू मूसा अशअरी रज़ि० को यमन में इस्लाम की दावत व तबलीग के लिए नियुक्त फरमाया तो रवाना करते वक़्त यह नसीहत फरमाई—

अनुवादः दीने इलाही को आसान करके पेश करना, सख़्त बना कर नही, लोगों को खुशखबरी सुनाना, और नफरत न दिलाना।

(बुख़ारी 2/622)

यह तबलीगी नियम हैं जो एक दाई व धर्म प्रचारक के कामयाबी के मंत्र हैं, आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० के सामने और सहाबये किराम रज़ि० ने आम मुसलमानों के सामने इसी उसूल के मुताबिक दीने इलाही को पेश किया और कामयाबी हासिल की, दीन की जायज़ आसानी और सुहूलत को पेश करना और उसको सख़्त, कठोर और मुश्किल ना बनाना ही उसके आम कबूलियत की राह है, साथ ही अल्लाह तआला के लुत्फो शफ़क़त, रहमो करम महब्बत और दिलों को मोह लेने वाली आवाज़ों से दिलों को पुर उम्मीद और खुश करना इससे कहीं बेहतर है कि बात बात पर खुदा की कह्हारी व जब्बारी (यानी उसकी सख़्त पकड़ और उसकी सज़ाओं) और उसकी प्रभुत्व व यातनाओं का ज़िक्र करके दिलों को खौफजदा व मायूस बनाया जाये।

तदरीज (धीरे-धीरे होना)—

तबलीग का एक और नियम आपसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तालीम फरमाया कि किसी नई क़ौम को दावत देते समय शरीअत के सारे अह्काम का बोझ एक साथ उसकी गर्दन पर न डाला जाये बल्कि धीरे धीरे वह उसके सामने पेश किये जायें, पहले तौहीद और रिसालत को पेश करना चाहिए, उसके बाद इबादत को, इबादात में भी अहम, फिर अहम के उसूल को पेशे नज़र रखना चाहिए, इबादात में सबसे अहम नमाज़ है, फिर ज़कात है, फिर दूसरे फराइज़ हैं, हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि० को यमन भेजते समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया—

"तुम यहूदियों और ईसाईयों की एक क़ौम के पास जाओगे तो उनको पहले इसकी दावत देना कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके रसूल हैं, जब वह यह मान लें तो उनको बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर दिन रात में पाँच वक्त की नमाज़ें फर्ज की हैं, और जब वह यह मानलें तो उनको बताओ कि खुदा ने उन पर सदक़ा फर्ज किया है, यह

सदक़ा उनके दौलत मंदों से लेकर उनके गरीबों को दे दिया जायेगा, जब वह इसको तसलीम करलें तो देखो सद्क़े में चुन चुन कर उन का अच्छा माल न लेना, और हाँ! मज़लूम की बद दुआ से डरते रहना कि उसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं।

(सही बुख़ारी 2/623)

तालीफ़े क़ल्ब (दिलजोई करना)—

तबलीग व दावत के बारे में इस्लाम ने एक और तरीक़ा भी पेश किया है, जिसको तालीफ़े क़ल्ब यानी दिल जोई कहा जाता है, तालीफ़े क़ल्ब के शाब्दिक माना हैं "दिलों को मिलाना" और इस का मकसद उस आदमी के साथ जिसको इस्लाम की तरफ माइल (आकृष्ट) करना हो, लुत्फो महब्बत, इमदादो इआनत और गमख़्वारी व हमदर्दी करना है, क्योंकि इन्सान इन शरीफाना अख़्लाक़ का शुक्रगुज़ार होता है और वह ज़िद, दुश्मनी और बुग्ज़ को दूर करके हक़ को कबूल करने की सलाहीयत पैदा कर देती है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत से लोगों को अपने इस आला इन्सानी अख़्लाको किरदार से इस्लाम में दाख़िल कर लिया था, चुनांचि मक्के के कुछ मालदार और हैसियत वाले लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इसी जज़्बे से मुतअस्सिर हो कर इस्लाम लाये थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जंगे हुनैन की ग़नीमत का सारा माल ऐसे ही लोगों में तक़सीम कर दिया था, नतीजा यह निकला कि फिर हक़ के खिलाफ उनकी गर्दन न उठ सकी, सफ़वान जो इस्लाम के सख़्त मुखालिफ और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत जियादा बुग्ज़ रखते थे वह कहते हैं कि "मुझको आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न इतना दिया और इतना दिया, और मुझे उनसे सख़्त बुग्ज़ था, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन एहसानात ने मुझे ऐसा मुतअस्सिर किया कि अब मेरी निगाह में उनसे जियादा कोई प्यारा नहीं। (मुस्लिम 2/290)

एक दफा एक देहाती ने आकर कहा कि इन दोनों पहाड़ों के मध्य बकरियों के जितने रेवड़ हैं मुझको दे दीजिये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको वह सब देदिये, यह फय्याजी देख कर उस पर ऐसा असर पड़ा कि उसने अपने पूरे क़बीले से जा कर कहा "भाईयो! इस्लाम कबूल करो, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतना देते हैं कि उनको अपनी मुहताजी और निर्धनता का डर ही नहीं रहता"। (मुस्लिम)

एक यहूदी का लड़का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत करता था वह बीमार पड़ा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको देखने के लिए तशरीफ ले गये और जा कर उसके सरहाने बैठ गये फिर फरमाया कि लड़के इस्लाम कबूल करले उसने प्रश्नभरी निगाह से बाप की तरफ देखा, उसने कहा अबुल कासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मान ले, चुनांचे वह मुसलमान हो गया और जब आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम वहाँ से उठे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से यह जुम्ले निकल रहे थे कि, उस खुदा की तारीफ, जिसने इसको जहन्नम से बचा लिया। (बुख़ारी 1/181)

जारी............

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ....

प्रश्नः निकाह पढ़ाने का हक लड़की के वकील के काजी का है या लड़के की तरफ से काजी को?

उत्तरः निकाह की मजलिस में लड़का मौजूद होता है और लड़की का वकील जिस को काजी बनाता है उसी को ईजाब व क़बूल का हक होता है अगर लड़के वाले किसी को काजी मुकर्रर करना चाहते हैं लेकिन लड़की का वकील किसी और को काजी बनाता है ऐसी सूरत में लड़की के वकील के काजी को ही निकाह पढ़ाने का हक होगा। लड़के की तरफ के काजी को अगर लड़की का वकील इजाजत नहीं देता है तो वह निकाह पढ़ा ही नहीं सकता।

प्रश्नः लड़का और लड़की ने अपने वालिदैन को बताए बिना कोर्ट मैरेज कर ली, वहां सिर्फ एक फार्म भरा गया दोनों ने अपने अपने कालम पर हस्ताक्षर कर दिये, क्या निकाह हुआ या नहीं?

उत्तरः इस्लामी शरीअत के मुताबिक यह निकाह नहीं हुआ। इस्लामी शरीअत के मुताबिक निकाह चाहे कोर्ट में हो चाहे मस्जिद में और चाहे किसी और जगह, दो आक़िल बालिग़ मुसलमान गवाहों के सामने शरई ईजाब व क़बूल जरूरी है।

प्रश्नः चिट्ठी द्वारा (खत के जरिये) निकाह का ईजाब व क़बूल हो सकता है या नहीं?

उत्तरः चिट्ठी द्वारा ईजाब व क़बूल नहीं करना चाहिए लेकिन अगर कोई खास मजबूरी हो तो सिर्फ ईजाब चिट्ठी द्वारा हो सकता है जैसे जैद अपनी लड़की जैनब का निकाह उमर के साथ करना चाहता है, जैद लखनऊ में रहता है और उमर ढाका (बंगलादेश) में रहता है दोनों एक दूसरे से वाकिफ़ हैं। अब जैद उमर को खत में लिखता है कि मैं जैद साकिन डालीगंज, लखनऊ अपनी बेटी जैनब को तुम्हारे (उमर के) निकाह में देता हूँ, क्या तुमने क़बूल किया? अब उमर दो आकिल, बालिग़ मुसलमानों के सामने वह खत पढ़ कर सुनाये और कहे मैंने क़बूल किया, जैनब बिन्त जैद को अपने निकाह में ले लिया, इस तरह यह क़बूल सही हो गया। अब उमर जैद को चिट्ठी द्वारा इसकी खबर दे दे इस तरह चिट्ठी द्वारा निकाह हो सकता है मगर यह अच्छी शक्ल नही है इससे बचना चाहिए।

अगर एक मजलिस में लड़का मौजूद है और लड़की का वकील मौजूद है तो ईजाब व क़बूल दोनों दो गवाहों के सामने ज़बान से अदा किये जायेंगे लिख कर ईजाब व क़बूल नहीं हो सकते।

❖❖❖

पाठकों से अनुरोध है कि वह अपने प्रश्न स्पष्ट हिन्दी में लिखा करें।

मुस्लिम बच्चों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबंध

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

मुसलमानों में शिक्षा की रुचि कम होने के कारण हम मुसलमान जीवन स्थल में पतन की ओर जा रहे हैं,व्यक्ति गति में कुछ लोग प्रयासों से उन्नति कर रहे हैं लेकिन ऐसे उदाहरण उँगलियों पर गिने जा सकते हैं बड़े शहर हों या छोटे, कस्बे हों या गाँव यदि समीक्षा की जाये तो दस से पन्द्रह प्रतिशत मुसलमान शिक्षित मिलेंगे, कस्बों और देहातों का और बुरा हाल है। अगर वहाँ मदरसे न हों तो और भी बुरा हाल हो जाये। उसके मुकाबले में वतनी भाईयों में शिक्षा प्राप्त करने का अधिक रवाज़ है। यहाँ तक कि सुब्ह के वकत देहातों से गुज़रें तो बच्चों और बच्चियों की लाइनों की लाइने स्कूल जाती हुई दिखाई देंगी। उन लाइनों में मुसलमान बच्चे बच्चियों की संख्या न के बराबर होती है। अलबत्ता खेतों और बागों में मुसलमान बच्चों को जानवर चराते देख सकते हैं और खून के आँसू रो सकते हैं।

इस दशा में यह आशा करना कि हमारी कौम उन्नति करेगी, अपने को धोखा देना है। हमारे नेता चाहे वह दीनी हों या दुन्यावी उन का काम केवल उर्दू समाचार पत्रों द्वारा शासन से अपनी माँगें मांगना रह गया है, इससे जियादा वह अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। मुसलमान बच्चों के लिए शायद वह प्रारम्भिक शिक्षा के प्रबंध को आवश्यक नहीं जानते। जब बच्चा प्राइमरी शिक्षा नहीं प्राप्त करेगा तो उसकी बुन्याद कैसे बनेगी। हमारे जो लोग शिक्षा की ओर ध्यान भी देते हैं तो वह तो मेडिकल कालेज या इन्जीनियरिंग कालेज स्थापित करने की सोचते हैं।

इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है इन मेडिकल कालेज और इन्जीनिरिंग कालेज से आम मुसलमानों को क्या फाइदा पहुँचेगा? लोखों रूपया डोनेशन देने के बाद ऐडमीशन मिल पाता है, इस सिलसिले में मुसलमान बच्चों को कोई रिआयत नहीं मिलती इस परिस्थिति में आपके स्थापित किये हुए कालेजों से मुसलमान बच्चों को कोई लाभ नहीं मिलता अगर लाखों रूपया डोनेशन देकर ऐडमीशन लेना है तो गैर मुस्लिमों के कालेजों में भी आसानी से ऐडमीशन मिल सकता है।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि यदि मुसलमान बच्चे प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा नहीं प्राप्त करेंगे तो कालेज की शिक्षा में कैसे पहुँचेंगे? क्या अच्छा होता कि उच्च शिक्षा हेतु कालेज स्थापित करने वाले धनवान मुसलमान, गरीब मुस्लिम बच्चों की प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा की ओर भी ध्यान देते और मुसलमान बच्चों के लिए दीनी तालीम के साथ प्राइमरी तथा माध्यमिक स्कूल स्थापित करते ऐ बुद्धिमानों जरा इस ओर ध्यान दो। ❑❑

परदा

—शमीम इक़बाल ख़ाँ

औरतों के लिए परदे का शब्द प्रयोग होते ही मुसलमानों के पिछड़ी मानसिकता पर आंसू बहाने के लिए लोग मुँह बिसोरने लगते हैं और मुसलमानों से दया दिखाने के लिए मुँह से 'च च' की आवाज निकालने लगते हैं, परदे की मुख़ालिफ़त में देसी और विदेसी सभी एक साथ खड़े हो जाते हैं इन में हिन्दू भी हो सकते हैं, ईसाई भी हो सकते हैं और यहूदी भी हो सकते हैं, हक़ीकत से कोसों दूर यह मुख़ाल्फ़त बराये मुखाल्फ़त होती है, इस्लाम ने औरतों को समाज में जो मुक़ाम दिया है वह सच्चाई शायद लोगों से हज़म नहीं होती है और इसीलिए किसी न किसी मंच से इस्लाम को सुधारने की आवाज़ें आने लगती हैं, मुस्लिम औरतों को परदे से निकालने की तदबीर की जाने लगती है, हालांकि इनको यह नहीं मालूम कि इस्लाम ने परदे की प्रथा प्रचलित नहीं की है पहले से चले आ रहे रिवाज का समर्थन किया है, आइये! हम थोड़ा इस्लाम से पहले के धर्मों में परदे की व्यवस्था को देखते हैं।

'येशिवा' नामक शोध विश्वविद्यालय जो न्यूयार्क सिटी में 1886 ई0 से स्थित है, इस विश्वविद्यालय के बाइबिल साहित्य के प्रोफ़ेसर डॉक्टर मेनशमत एम0ब्रेयर अपनी किताब 'The Jewish woman in Rabbinic Literature में अंकित किया है कि यहूदी महिलाओं के रिवाज में है कि जब वह सार्वजनिक रूप से बाहर जाने लगें तो अपने चेहरे को ढक लिया करें, और कभी—कभी सिर्फ़ एक आँख को छोड़ कर पूरे चेहरे को ढक लें, उन्होंने पहले के कुछ राहिबों के कथन भी अंकित किये हैं—

- यहूदी लड़कियों को चाहिए कि वह बगैर सर ढके रास्ता न चलें।
- जो व्यक्ति अपनी पत्नी के बाल दिखाता है और प्रदर्शन के लिए संवारता है उसे निर्धनता का शाप मिलता है।

इनके यहाँ धार्मिक रूप से बिना सर ढके इबादत के लिए धार्मिक पुस्तक के श्लोक पढ़ना या पढ़े जाते समय वहाँ उपस्थित रहना वर्जित है। पुराने यहूदी समाज में संभ्रांत परिवार की औरतें सरों पर पल्लू रखती थीं परन्तु वेश्याओं को सर ढकने की अनुमति नहीं थी।

यूरोप की यहूदी औरतों में उन्नीसवीं शताब्दी तक परदे का रवाज रहा परन्तु विभिन्न संस्कृति के सम्पर्क में आने से यह रवाज़ धीरे—धीरे खात्मे के कगार पर आ गया। यहूदी औरतें रवायती परदे को खत्म करके नंगे सर बाहर निकली या फिर बालों को ढकने के लिए मात्र एक विग का प्रयोग उनको बड़ा आसान लगा। यहूदियों में हेसेडिक सम्प्रदाय की महिलायें अभी भी विग का प्रयोग करती हैं।

ऐसा माना जाता है कि ईसाइ सम्प्रदाय में 'कैथोलिक नन' सदियों से अपना सर

ढके रहती हैं लेकिन ऐसा नहीं है, इस सम्बन्ध में 'सेन्ट पाल' ने नई तौरेत (New Testament) में परदे के बारे में बड़ी रोचक बातें अंकित की हैं वह लिखते हैं—

"हर पुरुष का सर मसीह है और हर महिला का सर आदमी और मसीह का सर परमेश्वर होता है। प्रत्येक मनुष्य जो अपने ढके सर के साथ प्रार्थना करता है या प्रवचन करता है वह अपने सर की तौहीन करता है, और जो महिला बगैर सर ढके प्रार्थना करती है या प्रवचन देती है वह अपने सर की तौहीन करती है लिहाज़ा उसके बाल कटा देने चाहिए, चूंकि महिला पुरुषों के अधीन होती है इसलिए उसको सर ढक कर ही रखना चाहिए, पुरुष को सर इस लिए न ढकना चाहिए क्योंकि वह ईश्वर की शोभा वाली छवि माना जाता है, पुरुष की उत्पत्ति महिला से नहीं हुई है बल्कि महिला की उत्पत्ति पुरुष से हुई है और न ही पुरुष को महिला के लिए बनाया गया है बल्कि महिला को पुरुष के लिए बनाया गया है, इसी कारण से पुरुष के अधिकार के रूप में महिला अपने सर पर परदे की पहचान रखती है। (New Omyrtmsyopms; Brtdopm (NIV) Corinthians 11:3-10)

सेन्ट टर्टूलियन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ में अंकित किया है कि "कुवांरियो! जब तुम गली में जाओ तो परदा डालो और चर्च में भी और जब अजनबियों के बीच में हो तब और, अपने भाइयों के बीच में भी परदा डालो।"

कैथोलिक चर्च के कैनन नियमों के अतिरिक्त एक नियम यह भी है कि महिलायें चर्च में अपने सरों को ढक कर रखें, ईसाइयों के कुछ संप्रदाय जैसे 'एमिश' तथा 'मेनानाइट्स की महिलायें वर्तमान समय में परदे में रहती हैं। चर्च के प्रतिनिधि महिलाओं के परदे का कारण यह बताते हैं कि 'सर का ढक कर रखना मनुष्य और ईश्वर की अधीनता का प्रतीक है।' यह वही तर्क है जो सेन्ट पॉल ने नये नियमों में दिया है।

उक्त तथ्यों से दो बातें प्रकाश में आती हैं, एक तो परदा प्रथा इस्लाम से पहले भी प्रचलित था और दूसरी बात प्रकाश में आई वह यह है कि महिलाओं पर पुरुषों की अधीनता की मोहर थी, उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। महिलाओं की दासतां प्रदर्शित करने वाली कुछ प्रथायें—

- यदि किसी विधवा के औलाद नहीं है तो उसे औलाद पैदा करने के लिए अपने मृत पति के भाई से शादी करनी पड़ेगी भले ही वह विवाहित हो। अगर भाई छोटा है तो उसके बड़े होने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।
- यदि किसी व्यक्ति ने किसी कुंवारी लड़की से शादी का वचन नहीं दिया और फिर बलात्कार किया। पता चलने पर वह लड़की के पिता को पचास शेकेल का भुगतान करेगा और उस लड़की से शादी करेगा जिससे बलात्कार किया और शादी के बाद कभी भी अपने जीवन में तलाक़ नहीं देगा।

(Deuteronomy 22:28-29)

सवाल यह उठता है कि उक्त कृत में वास्तव में किसे सज़ा मिली, क्या उस बलात्कारी को जिसने जुर्माना भरा, या उस लड़की को जिसके साथ बलात्कार किया गया और फिर उसकी शादी भी उसी बलात्कारी के साथ कर दी गई जिसके साथ जिन्दगी भर उसे रहना भी है।

मिस्र के डॉक्टर शरीफ़ अब्दुल अज़ीम, अपनी पुस्तक 'Woman in Islam Versus women in Christian' में लिखते हैं "कुछ लोग विशेषरूप से पश्चिम में शील सम्बन्धी सुरक्षा के पूरे तर्क का उपहास करते हैं, उनका तर्क यह है कि उत्तम सुरक्षा शिक्षा, सभ्य व्यवहार और आत्म संयम के प्रयास से हो सकती है। इसे ठीक तो कहा जा सकता है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है।

• यदि सभ्यता ही महिलाओं की सुरक्षा का समाधान हो सकता है तो उत्तरी अमरीका में कोई महिला किसी सुनसान गली में चलने की हिम्मत क्यों नहीं कर सकती या किसी सुनसान पार्क से क्यों नहीं गुज़र सकती।

• यदि शिक्षा ही सुरक्षा का हल है तो सम्मानित कुइन्स विश्वविद्यालय के परिसर में महिला क्षात्र स्वतंत्रता से क्यों विचरण नहीं कर सकती?

• और यदि आत्म संयम ही इस का उत्तर है तो क्यों यौन उत्पीड़न से सम्बन्धित सूचना प्रतिदिन मीडिया देती रहती है, उदाहरण के लिए पिछले कुछ वर्षों में यौन उत्पीड़न से सम्बन्धित अपराध में नौसेना के अधिकारी, मैनेजर्स, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर्स, संस्था के संचालक, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और हद तो उस वक्त हो गई जब अमरीका के राष्ट्रपति भी सम्मिलित मिले।

कुइन्स विश्वविद्यालय जो किंगस्टन, ओरटेरिया, कनाडा में 1841 से स्थापित है के महिला कार्यालय के डीन द्वारा जारी एक पम्फ़लेट में निम्न आँकड़े प्रस्तुत किये गये जो चौंका देने वाले हैं।

• कनाडा में एक महिला का यौन–उत्पीड़न हर छः मिनट पर किया जाता है।

• कनाडा में तीन में से एक महिला का यौन–उत्पीड़न उसके जीवन काल में किसी समय किया गया।

• चार में से एक महिला के बलात्कार का प्रयास उसके जीवन काल में किया गया।

• आठ में से एक महिला का यौन–उत्पीड़न कालेज अथवा विश्वविद्यालय में किया गया।

• एक अध्ययन में पाया गया कि कनाडा विश्वविद्यालय के साठ प्रतिशत लोगों ने बताया कि वे यौन उत्पीड़न में पकड़े नहीं गये।

जिस समाज में हम रहते हैं बुनियादी तौर पर वहां कुछ गल्तियां हैं समाज की जीवन शैली और संस्कृत में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की ज़रूरत है।

• पाकदामनी की सभ्यता होनी चाहिए।

• पहनावा ऐसा हो जिससे नेकचलनी झलके बातों में शर्म व हया हो।

• मर्द और औरत दोनों में लज्जा और विनयशीलता हो।

अन्यथा दिन ब दिन बड़े ख़तरनाक आँकड़े सामने

आयेंगे और दुर्भाग्यवश इसका खमयाज़ा औरतें झेलती रहेंगी।

हिन्दू धर्म में भी परदे का उल्लेख मिलता है। राम और सीता से जब महाऋषि परूषुराम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से मिलने आये तो राम ने अपनी पत्नी सीता से महाऋषि का परिचय कराते हुए कहा "सीता! यह हमारे अग्रज (बुजुर्ग) हैं, अपनी आँखें नीची रखो और पल्लू डाल लो"।

गुप्त काल और उसके बाद के काल के सिक्कों में एक सिक्का ऐसा मिला है जिस पर एक हिन्दुस्तानी महिला की तस्वीर बनी है जो अपने सर पर पल्लू डाले है और पल्लू से उसका कन्धा भी ढका है और कुछ तस्वीरों में बाहें भी ढकी हैं, हिन्दुस्तान के कई इलाकों में आज भी औरतें लम्बा घूँघट अपने बड़ों के सामने निकालती हैं यह उनकी धार्मिक मान्यता है। विवाह भी एक धार्मिक कार्य है अतः उस समय भी दुल्हन का सर पल्लू से ढका रहता है बल्कि विवाह की रस्मों में जो महिलायें सम्मिलित होती हैं वे प्रायः सर ढके ही रहती हैं या घूँघट निकालती हैं।

हिन्दू धर्म में धार्मिक कार्य के सम्पादन के समय या बड़ों को सम्मान देने के वास्ते सर ढकने का रिवाज़ है। चूँकि यह रिवाज धार्मिक कार्यों से जुड़ा है लिहाज़ा यह प्रथा आरम्भ से ही होगी। इस्लाम ने इन्हीं रिवाज़ों में चल रहे परदे की प्रथा का समर्थन किया है किसी नई प्रथा का प्रचलन नहीं किया है। परदे की प्रथा में शालीनता है, सभ्यता है, सुरक्षा है और दूसरों के प्रति आदर की भावना है। जबकि ईसाईयों के यहां महिलाओं के लिए परदा इसलिए है कि वह पुरुषों की अधीनता की पहचान बनें।

शरह हो या कस्बा हो, स्कूल, कालेज और विश्व–विद्यालयों के छात्रायें हों या "जाब करने वाली, अधिकतर लड़कियां नकाब के तर्ज पर अपने दुपट्टे से सर व चेहरा रास्ता चलते समय ढक लेती हैं, यह किसी फिल्म से नक़ल किया गया फैशन नहीं है बल्कि अपने को सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। इस तरह ढकी हुई लड़कियों से छेड़खानी करने का दुश्साहन करना तो बहुत बड़ी बात है आँख उठाकर देखने का भी साहस नहीं करेगा वह सोचेगा कि मेरी बहन या कोई सगी सम्बन्धी हो सकती है। नकाब महिलाओं को सुरक्षा देती है जिसको दास्ता की पहचान बताया जाता है।

❖❖❖

कुर्बानी का बयान

जिस जानवर के दाँत न हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

1. बिहिश्ती जेवर भाग–3 कुर्बानी का बयान।

जिस जानवर के दाँत न हों मगर वह चारा खा लेता हो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है।

2. क़ामूसुल फिक्ह भाग दो उज़्हिया का बयान

अरे मेरी बेटी

एक चरित्रवान स्वाभिमानी नारी की कथा

—इदारा

मेरी शादी को दस वर्ष हो चुके हैं, पहले वर्ष मैंने एक बच्ची को जन्म दिया, सास ससुर सब खुश थे परन्तु पति जी का मुँह बना रहा, तीसरे वर्ष मैंने दूसरी बच्ची को जन्म दिया, इस बार ससुराल के सभी लोगों का मुँह बना रहा, पाँचवें वर्ष मैं फिर उम्मीद से हुई लेकिन मेरे पति एक अज्ञात डाक्टर के यहाँ ले गये जाँच कराई, डाक्टर ने बताया गर्भ में बच्ची है पति जी ने गर्भपात करा दिया, छटे वर्ष फिर यही कहानी दोहराई गई और गर्भपात कराया गया आठवें वर्ष फिर यही हुआ मैं अपने मैके चली गई और विभिन्न बहानों से 6 माह तक न आई इस प्रकार यह गर्भ सुरक्षित रहा अब भी पति जी चेकिंग के चक्कर में रहे परन्तु मैंने बहानों से जाने से इन्कार कर दिया यहाँ तक कि पैदाईश के दिन करीब आ गये, पति जी ने कहा अपने मैके वालों से कहो हास्पिटल ले जाएं, परन्तु बच्ची की पैदाईश पर मैं बेटा पाने के लिए दूसरा विवाह करूंगा, मेरी माँ मुझे जच्चा बच्चा हास्पिटल ले गई, नारमल ही पैदाईश हुई परन्तु फिर बच्ची थी। मैं इसलिए बहुत दुखी थी कि अब देखो मेरा क्या हाल होता है।

मेरे बेड के साथ एक दूसरी स्त्री लेटी थी उसने लड़का जना था जो बड़ा सुन्दर और स्वस्थ्य था फिर भी उसकी माँ के चेहरे पर दुख दिखाई देता था, लेकिन उसने मेरे आंसुओं को देख कर पूछ ही लिया क्या आप बच्ची के जन्म पर दुखी हैं? मुझ से रहा न गया मैंने पति की बात सुना डाली। उस स्त्री ने तुरन्त अपने बच्चे को मेरे बिस्तर पर डाल दिया और मेरी बच्ची को उठा लिया और कहा वह बच्चा आपका है और यह बच्ची मेरी है, फिर हम दोनों ने राजी खुशी से तबदीली कर ली तो कोई केस भी नहीं बनेगा।

मैं हक्का बक्का थी हैरान थी मैंने पूछा तुम्हारा पति इस पर कैसे राज़ी हो सकेगा? उसने कहा मेरे पति नहीं मैं वेश्या हूँ और लड़का मेरे किसी काम का नहीं होगा, लड़की मेरे काम आएगी, यह सुनते ही मेरे सारे शरीर में कपकपी आ गई और मैंने कहा अरे मेरी बेटी और जल्दी से मैंने उससे ले लिया और सोचती रही कि मैं अपनी बेटी को वेश्या न बनाऊँगी। मैं हास्पिटल से डिस्चार्ज हो कर पति के घर आई, कोई मुझसे बोल न रहा था, पति जी आये और बोले अब तो मैं बेटा पाने के लिए दूसरा विवाह करूंगा और तुम को छोड़ दूंगा, वैसे तुम्हारा जी चाहे तो इसी घर में रहो परन्तु मेरा तुम्हारा सम्बन्ध टूट जाएगा। मैंने कहा ठीक है आपका जो जी चाहेगा करें लेकिन हास्पिटल की मेरी कहानी सुन लें। फिर मैंने पूरी बात सुनाई। इस कहानी से मेरे पति जी का मूड एक दम बदल गया और चिल्ला कर बोले तू ने मेरी बेटी को वेश्या बनने से बचा लिया बड़े ही साहस का काम किया अब तो मेरा जीवन तेरे साथ ही बीतेगा। ❑❑

मेकसीको में इस्लाम

हिन्दी लिपिः मु0 शाहिद खाँ

—जावेद अख़्तर नदवी

अमरीका जहाँ ये 11 नवम्बर की घटना हुई उसी से सटा हुआ एक देश मेकसीको में इस्लाम धर्म की एक तेज धारा प्रवाहित हो रही है। सिर्फ 20 वर्ष में इस देश में क्या बदलाव आया देखते चलिए—

मेकसीको को लातीनी देशों में गिना जाता है। यह देश अमरीका के बिल्कुल समीप स्थित है। किन्तु यहां पर हस्पा नवी भाषा स्पेन की भाषा का चलन अधिक है। न सिर्फ वहाँ के अधिकतर नागरिक बल्कि यहां के सभी रहने वाले अल्पसंख्यक भी ईसाइयत के मानने वाले रहे हैं।

आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व इस्लाम व मुसलमान शब्द वहां की जनता में कुछ अजनबी सा मालूम होता था। किन्तु सन् 1994 ई0 में मराकश और मेक्सीको जाने वाले एक अरबी मुसलमान का कथन है कि उस समय नमाज़ पढ़ने के लिए जगह की तलाश बहुत दूर तक करनी पड़ती थी। और बहुत कष्ट उठाने पड़ते थे, किन्तु मजबूरी में हम सभी लोग पाकिस्तान के दूतावास में नमाज़ पढ़ लिया करते थे।

किन्तु आज स्थित यह है कि आज मेकसीको शहर के मध्य में तीन मंजिला इस्लामी केन्द्र बना हुआ है। और कुछ अलग—अलग जगहों पर मस्जिदें भी बन चुकी हैं। और हर दिन वहां के नागरिक मुसलमान होते जा रहे हैं। वे कहते हैं कि वहां के नागरिक इस्लाम से प्रभावित होने में दो चीज़ें मुख्य भाग बनी हुई हैं।

(1). कुर्आन मजीद

(2). नाइन एलेवन की घटना के बाद सम्पूर्ण संसार में मुसलमानों के विरोध में उठाई गयी क्रूरता भरी आवाज़ व धरनों से भरी लहर।

और आज वहां की स्थित यह है कि मेकसीको शहर में तेरह हज़ार मुसलमान रह रहे हैं। (नये मुसलमान) जो इन्टरनेट के द्वारा कुरआन की शिक्षा गृहण कर रहे हैं। और अब उनको बड़े—बड़े मुस्लिम धर्म के प्रचारकों से प्रोत्साहन मिल रहा है।

और जिनमें कुछ लोग वहां रह कर नव मुस्लिमों को ईश्वरीय आज्ञा व धर्म के कर्तव्य सिखाते हैं। और वहाँ पर धार्मिक समारोह व कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। ❑❑

उर्दू सीखिये

—इदारा

गतिशील हिन्दी अक्षरों के उर्दू रूप

हिन्दी	ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ
उर्दू	بَ	بَا	بِ	بِی	بُ	بٗو	بِے	بَے	بُو	بَو
हिन्दी	भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ
उर्दू	بھَ	بھَا	بھِ	بھِی	بھُ	بھٗو	بھِے	بھَے	بھُو	بھَو
हिन्दी	म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ
उर्दू	مَ	مَا	مِ	مِی	مُ	مٗو	مِے	مَے	مُو	مَو
हिन्दी	य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ
उर्दू	یَ	یَا	یِ	یِی	یُ	یٗو	یِے	یَے	یُو	یَو
हिन्दी	र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ
उर्दू	رَ	رَا	رِ	رِی	رُ	رٗو	رِے	رَے	رُو	رَو
हिन्दी	ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ
उर्दू	لَ	لَا	لِ	لِی	لُ	لٗو	لِے	لَے	لُو	لَو
हिन्दी	व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ
उर्दू	وَ	وَا	وِ	وِی	وُ	وٗو	وِے	وَے	وُو	وَو
हिन्दी	श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ
उर्दू	شَ	شَا	شِ	شِی	شُ	شٗو	شِے	شَے	شُو	شَو
हिन्दी	स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ
उर्दू	سَ	سَا	سِ	سِی	سُ	سٗو	سِے	سَے	سُو	سَو
हिन्दी	ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ
उर्दू	ہَ	ہَا	ہِ	ہِی	ہُ	ہٗو	ہِے	ہَے	ہُو	ہَو

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

मंदिर की मांग से कांग्रेस का किनारा—

कांग्रेस ने वरिष्ठ नेता शंकर सिंह वाघेला के राम मंदिर निर्माण की मांग से खुद को अलग कर लिया है। पार्टी प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि बाबरी मस्जिद—रामजन्म भूमि मुद्दे पर उसका रुख एक दम साफ है। सीडब्लूसी में इस मुद्दे पर एक प्रस्ताव भी पारित कर चुकी है। ऐसे में पार्टी वाघेला से सहमत नहीं है।

गुजरात विधान सभा में विपक्ष के नेता वाघेला ने मनोनीत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से संवैधानिक दायरे में रहते हुए राम मंदिर का निर्माण करने की मांग की। मोदी को विदाई देने के लिए विधानसभा के विशेष सत्र में हिस्सा लेते हुए वाघेला ने उक्त बातें कहीं और समान नागरिक संहिता का भी जिक्र किया। वाघेला के इस रुख के बाद कांग्रेस बैक फुट पर आ गई है। पार्टी की दलील है कि वाघेला ने व्यंग्यात्मक लहजे में इन बातों को कहा था वाघेला ने विधानसभा में कहा था कि भाजपा को कश्मीरी पंडितों से किए अपने वादे को भी पूरा करना चाहिए।

वाघेला ने तारीफ के साथ किए कटाक्ष—

गुजरात में नेता विपक्ष शंकर सिंह वाघेला ने इस मौके पर मोदी की तारीफ के साथ उन पर कटाक्ष भी मारे। उन्होंने कहा, "आप भाजपा के नहीं, देश के प्रधानमंत्री हैं।" वहीं उन्होंने कहा कि वह देखना चाहते हैं कि भाजपा कैसे राम मंदिर के निर्माण और गुजरात के लिए फंड न जारी करने की शिकायतें दूर करती है।

भारत से साढ़े तीन गुना ज़्यादा चीन का रक्षा बजट—

पड़ोसी मुल्क चीन के मुकाबले भारत की सैन्य तैयारियां काफी पीछे हैं। वर्ष 2014—15 के लिए रक्षा बजट में 12.5 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी के साथ भारत का सैन्य खर्च 2.29 लाख करोड़ रूपये (38 अरब डॉलर) हो गया है लेकिन चीन का रक्षा बजट (113 अरब डॉलर) हो चुका है। यह भी कहा जाता है कि चीन घोषित बजट के अलावा भी काफी रकम सैन्य तैयारियों पर खर्च करता है।

भारत और चीन के रक्षा बजट में इतनी अधिक असमानता ऐसे समय आई है जब दोनों देशों की सेनाएं चार हजार किलोमीटर से अधिक लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अपनी सैन्य क्षमताओं में वृद्धि कर रही हैं। हालांकि भारत ने चीन से लगी नियंत्रण रेखा पर बुनियादी ढांचे की सुविधाओं और सैन्य तैयारियों को मजबूत बनाना शुरु किया है। सशस्त्र बल पूर्वोत्तर राज्यों में क्षमता वृद्धि पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। सेना चीन के साथ सीमा से निपटने के लिए 17वीं माउंटेन स्ट्राइक कोर गठन की प्रक्रिया में है। वायुसेना ने सुखोई 30 एमकेआई लड़ाकू विमानों के स्क्वाड्रन में बढ़ोत्तरी भी की है तथा लड़ाकू विमानों और अन्य विमानों के संचालन के लिए पुरानी एयरफील्ड का उन्नयन कर रही है।

❖❖❖